रसशास्त्र

रसशास्त्र की परिभाषा -

" रसोपरसलोहानि यन्त्रादिकरणानि च । शुद्ध्यर्थमपि लोहानां तन्त्रादि करणानि च ।।

शुद्धिः सत्त्वं द्रुतिर्भस्मकरणं च प्रवक्ष्यते।। " (र.र.स.1/9)

जिस शास्त्र के अन्तर्गत रस, महारस, उपरस, साधारस रस, धातु, उपधातु, रत्न, उपरत्न, सुधा वर्ग, सिकता वर्ग, विषवर्ग, क्षारवर्ग आदि पदार्थों का विस्तारपूर्वक वर्णन, यन्त्र, पुट आदि उपकरणों की संरचना, पारद के संस्कार, धातुओं की शुद्धि करने हेतु आवश्यक भिन्न भिन्न क्रियाओं, प्रयोगों एवं धातुओं की शुद्धि, सत्त्व, द्रुति, भस्म तथा पिष्टी इत्यादि सभी विषयों का भी सविस्तार वर्णन किया गया है। उसे रसशास्त्र कहते हैं।

निरुक्ति - **रस् धातु + अच् प्रत्यय** - रस / सत्व / liquid

रस -

- रसशास्त्र में रस शब्द से पारद का ग्रहण किया जाता है।
- यद्यपि आयुर्वेद विज्ञान एवं संस्कृत साहित्य में रस शब्द से अनेक द्रव्यों एवं भावार्थों का ग्रहण किया जाता है
- यथा- पारद, स्वरस, जल, द्रव, निर्यास, हर्ष, अनुराग, ध्वनि, बालक, सुवर्ण, विष, अमृत, शुक्र (वीर्य)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

परिभाषा - **" रसनात् सर्वधातुनां रसः इत्यभिधीयते । "**

पारद को स्वर्ण, रजत आदि सभी धातुओं को खा जाने से रस कहते है।

" जरारुङ्मृत्युनाशाय रस्यते वा रसो मतः । "

पारद का सेवन करने पर रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु का नाश होने से इसे रस कहते है।

रसौषधियों का महत्त्व -

1) जिस औषधि की मात्रा स्वल्प हो एवं विपुल गुणों को प्रदान करने वाली तथा शीघ्रता से जिसका दीपन-पाचन हो जाय, वह रसौषधि श्रेष्ठ होती है।
2) अल्पमात्रा में प्रयोग, अरुचि उत्पन्न नहीं करना, शीघ्र स्वास्थ्यलाभ पहुँचाना, असाध्य रोगों को भी दूर करना तथा चिरकाल तक सुरक्षित रहना रसौषधि की विशेषता है।
3) रसौषधियों द्वारा चिकित्सा करने पर दोष, दूष्य, देश, काल अथवा रोगी परीक्षा की आवश्यकता नहीं होना इसकी शक्ति को दर्शाता।

रसशास्त्र का इतिहास

प्रथम भिषक - रस शास्त्र में प्रथम भिषक भगवान शिव को माना जाता है।

रस शास्त्र के पितामह - नागार्जुन

- नागार्जुन और सिद्ध नागार्जुन के बारे में भी शास्त्र में वर्णन प्राप्त होता हैं।
- देहसिद्धि और लोह सिद्धि का वर्णन भी रस शास्त्र में आता है जो कि पारद द्वारा संभव होता है।

सिद्ध - 2

1) मन्त्र सिद्ध (ब्रह्मा)
2) तन्त्र सिद्ध (शिव)

कुल सिद्ध - 84

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सिद्धियाँ - 8

अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा ,प्राप्ति , प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व, चाष्टसिद्धियः।

रस शास्त्र के इतिहास को 4 भागो में बांटा गया हैं -

1) वैदिक काल
2) संहिता काल - 7 वी सदी
3) मध्य काल - 8 - 15 वी सदी
4) आधुनिक काल - 16 वी सदी

वैदिक काल -

- वैदिक काल से रस शास्त्र का आरंभ माना जाता हैं।
- वैदिक काल में मुख्यत: काष्ठऔषधि का प्रचलन था साथ ही रस औषधि तथा ताम्र , कांस , हिरण, रजत त्रपु का वर्णन मिलता है।

वैदिक काल में 4 औषधि का प्रयोग होता था

1) आथर्वणी
2) अंगिरसी
3) दैवी
4) मनुष्यता

देवी चिकित्सा - रस चिकित्सा

संहिता काल - 3 संहिता के अंतर्गत

- चरक संहिता
- सुश्रुत संहिता
- वाग्भट्ट संहिता

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

चरक संहिता -

- सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ है
- समय - ईसा पूर्व 1200 शताब्दी
- द्रव्यों के 3 भेद किए गए हैं औद्भिद् , जाङ्गम , पार्थिव

पार्थिव द्रव्यों -

- सुवर्ण, रजत, ताम्र, त्रपु, सीसक और लौह-इन छः धातुओं का उल्लेख मिलता है।
- रत्नों में - माणिक्य, मुक्ता, पुष्पराग, प्रवाल, हीरक, वैदूर्य, सूर्यकान्त, स्फटिक, शंख और शुक्ति का प्रयोग मिलता है।
- खनिजों में - शिलाजतु, हरताल, मनः शिला, तुत्थ, स्वर्णमाक्षिक, गन्धक, अञ्जन, रसाञ्जन, गैरिक आदि द्रव्यों का प्रयोग मिलता है।
- अयस्कृति का वर्णन किया गया हैं।

सुश्रुत संहिता -

- यह ग्रन्थ आयुर्वेद में ऐतिहासिकता के आधार पर द्वितीय स्थान पर है।
- रसशास्त्रीय द्रव्यों का विशेष उल्लेख मिलता है।
- पारद का स्पष्ट रूप **से बाह्य प्रयोगार्थ** उल्लेख हुआ है।
- **फेनाश्म** (सङ्ख्या) का इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है।
- धातुओं एवं रत्नों का प्रयोग चरक की अपेक्षा अधिक स्थानों पर कुछ नवीन रूप में मिलता है।
- **अयस्कृतिः** - सुश्रुत संहिता में अयस्कृति की विधि चरक संहिता से अधिक स्पष्ट है।

Ayurvedic Formulation

अष्टाङ्ग संग्रह एवं अष्टाङ्ग हृदय -

- ये दोनों ग्रन्थ आचार्य वाग्भट्ट ने चरक - सुश्रुत को आधार मानकर लिखे है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- इस ग्रन्थ में रसशास्त्रीय औषधियों का अधिक विकसित स्वरूप देखने को मिलता है।
- धातुओं के रस, गुण, वीर्य, विपाक का वर्णन मिलता है।
- मूषा में औषध को रखकर अग्नि संयोग द्वारा धातु के भस्म निर्माण विधि का वर्णन सर्वप्रथम किया गया हैं।
- पारद अंजन , भानु पाक विधि का वर्णन किया है।

मध्य काल -

- रस औषधि और धातु द्रव्यों आदि का विस्तार पूर्वक उत्थान मध्य काल में हुआ।

आधुनिक काल -

- वर्तमान काल को आधुनिक काल कहा जाता हैं।
- इस काल में रस शास्त्र के अंतर्गत नई नई खोजे की गई।

रस शास्त्र के कुछ मुख्य ग्रंथ एवं ग्रंथकर्ता -

ग्रंथ	ग्रंथकर्ता	काल
रसरत्नाकर / रसेन्द्रमंगल	नागार्जुन	7/8
योगरत्नमाला	सिद्धनागार्जुन	8th
रससिद्धि व धातुवादशास्त्र	व्याडि मुनि	9th
रस रत्न समुच्चय	रस वाग्भट्ट	13th

रसेश्वरदर्शन - यह ग्रन्थ माधवकृत सर्वदर्शन संग्रह में उद्धृत होने से 14 वीं शताब्दी से पूर्व का प्रमाणित होता है। जिसमें पारद द्वारा मोक्ष तथा शरीर स्थैर्य का उल्लेख मिलता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रस रसायन (Concept of Rasa Rasayan)

रस - **" जरारुङ्मृत्युनाशाय रस्यते वा । "**

वृद्धावस्था, रोग, मृत्यु का नाश करने वाले को रस कहा गया है ।

- पारद के अतिरिक्त जो द्रव्य (लौह- धातु आदि) पारद के सहयोग से अथवा मारण व्यादि प्रक्रिया द्वारा रसरूप में परिवर्तित हो जाता है उसे रस कहते है ।
- रस पारद द्रव्य का बोधक होता हैं ।

रसायन - **" रसायनन्तु तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिरसो मतः नाशनम् । "**

जरा और व्याधि को नष्ट करने में जो औषध समर्थ हैं उसे रसायन कहते हैं ।

- शरीर के अन्तर्गत प्रशस्त रस रक्तादि धातुओं का निर्माण-पोषण तथा धातुओं की शिथिलता से उत्पन्न रोगों को नष्ट करने में जो औषधि समर्थ हो, उसे रसायन कहते है।
- शरीर में ओज, कान्ति, तेज, वर्ण, उत्तम स्वर, नवयौवन आदि प्राप्त होने से औषध द्रव्य रसायन कहलाता है।'
- रसायन द्रव्यों के कर्म का बोधक है ।
- रसद्रव्य संस्कारित होकर रसायनगुणों को उत्पन्न करते है।

Ayurvedic Formulation

रस रसायन मे अंतर -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes +91- 8319811628 , 8962265728

रस	रसायन
रस (पारद) द्रव्य का बोधक है	रसायन द्रव्यों के कर्म का बोधक है
" रसनात् सर्वधातुनां रस इत्यभिधीयते । " सभी धातुओ का भक्षण करके अर्थात सभी धातुओ की शक्ति स्वयं मे ले लेने के कारण रस कहा जाता है ।	**" लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम् । "** उत्तम रसादि धातुओ को प्राप्त करने का जो उपाय है , उसे रसायन कहते है ।
" देहलोहमयीं सिद्धिं सूते सूतस्ततः स्मृतः । " रस देह सिद्धि एवं लौह सिद्धि को देने वाला होने के कारण सूत भी कहा जाता है ।	**" स्वस्थस्योर्जस्करं यत्तत्तद् वृष्यं तद् रसायनम् । "** जो औषध स्वस्थ व्यक्ति म् उर्जस्कर (ओज या प्रशस्त भावो को बढ़ाने वाली) होती है तथा वृष्य होने से रसायन कहि जाती है ।

रसशाला

जिस स्थान पर रस का संस्कार, रसौषधि निर्माण सम्बन्धी कार्य किये जाय उसे रसशाला कहते हैं।

रसशाला के निर्माण में चार घटक -

1) रसशाल का स्थान
2) रसशाला में कार्यरत अधिकारी (रसशास्त्र) तथा कर्मचारी (मृत्यु आदि)
3) रसशाला में कार्यस्थल या दिशा अनुसार कर्म विभाजन।
4) रसशाला में प्रयुक्त यन्त्र / उपकरण।

1) रसशाला निर्माण स्थल -

रसशाला का निर्माण ऐसे स्थल पर करना चाहिए जहाँ पर -

- किसी प्रकार की बाधा न हो। एवं वह स्थान आतङ्क रहित हो।
- जिस स्थल पर सब प्रकार की औषधियाँ उपलब्ध हों।
- जहाँ पर पानी (कूप) की उपलब्धता हो।
- (पूर्व) दिशा में निर्मित करना चाहिए।
- सम्यक रूप से वातायन (झरोखा) होना चाहिए जिससे प्रकाश हवा का प्रवेश होता रहे।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) रसशाला में कार्यरत वैद्य एवं कर्मचारी -

1) रसवैद्य
2) निघण्टुज्ञ जिसे औषधियों का अच्छा ज्ञान हो।
3) सर्वदेशजभाषाज्ञ - जो रसशाला के आसपास स्थित क्षेत्र या अन्य क्षेत्र की भाषओं का ज्ञाता है।

कर्मचारी -

- ❖ परिचारक - Attendants
- ❖ निधि साधक - Accountant store keeper
- ❖ बलिसाधक - Security guard
- ❖ रसायन कर्म हेतु - Pharmacy assistant
- ❖ धातुवाद हेतु
- ❖ भेषज आहरण हेतु - Drug collector

3) रसशाला में दिशा अनुसार कार्य विभाजन / कार्य स्थल -

रसशाला में विभिन्न कार्य को करने के लिए उन्हें दिशा अनुसार व्यवस्थित किया गया है जिससे कार्य सुचारु रूप से किया जा सके।

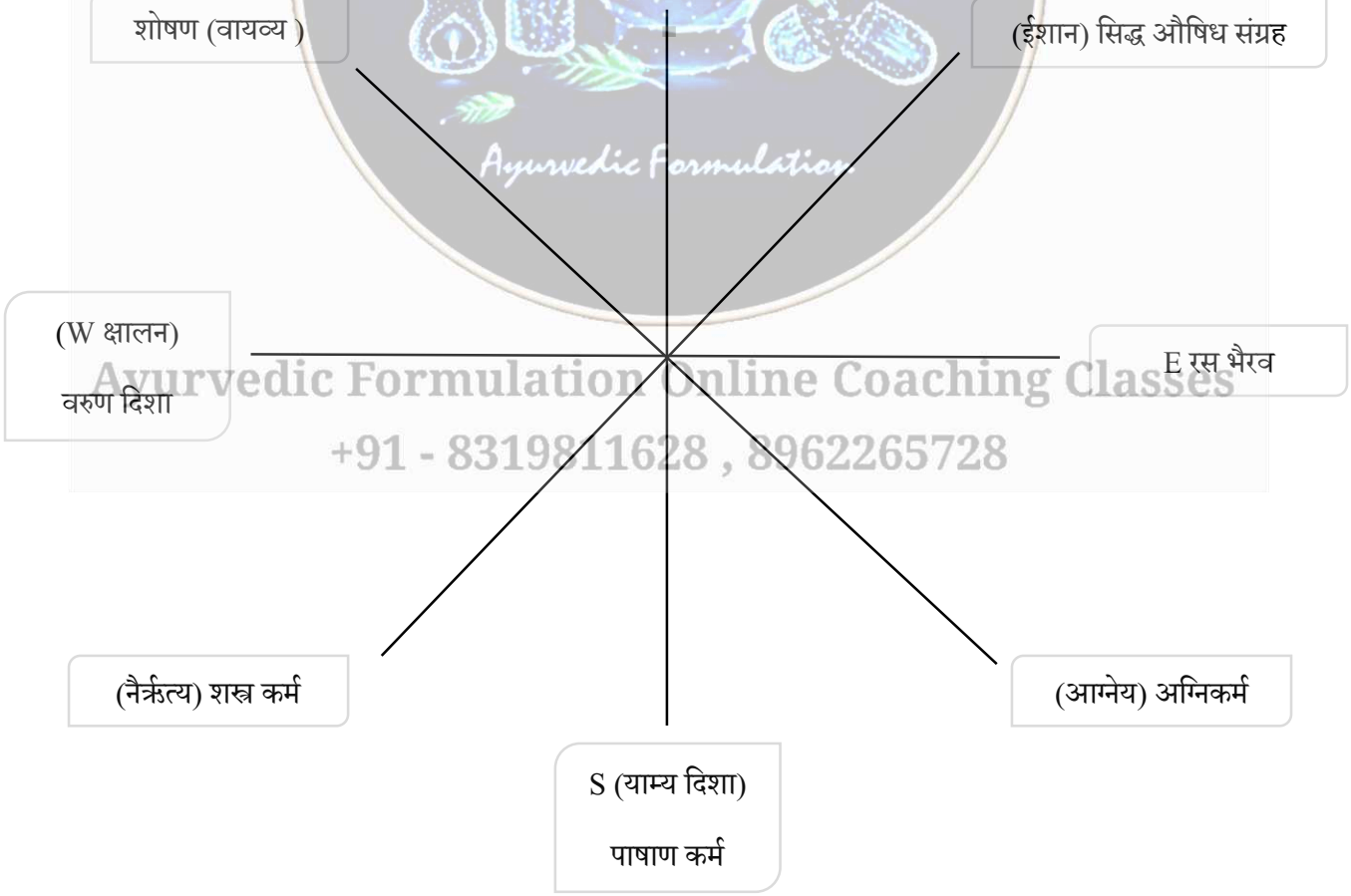

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- ❖ पूर्व दिशा में - रस भैरव की स्थापना
- ❖ आग्नेय दिशा में - अग्नि कर्म
- ❖ दक्षिण दिशा में - पाषाण कर्म (कूटने, पीसने का कार्य)
- ❖ नैर्ऋत्य दिशा में - शस्त्र कर्म
- ❖ पश्चिम दिशा में - क्षालन (धोने का कार्य)
- ❖ वायव्य दिशा में - शोषण कर्म (सुखाने का कार्य)
- ❖ उत्तर दिशा में - वेध कार्य
- ❖ ईशान दिशा में - सिद्ध औषधि तथा रसायन में उपयोगी पदार्थ संग्रह

4) रसशाला में संग्रहणीय / उपकरण -

रसशाला में निम्न उपकरणों का संग्रह करना चाहिए

- ➢ कोष्ठी - सत्वपातन कोष्ठी, सुराकोष्ठी, भूमिकोष्ठी, चलकोष्ठी
- ➢ अनेक प्रकार की जल द्रोणी
- ➢ भस्त्रिका (Blower) तथा नलिका।
- ➢ स्वर्ण, लोह आदि धातुओं से निर्मित कुण्डया (पतीली)।
- ➢ मूषा तथा इसके उपादान द्रव्य
- ➢ कोयले, उपले, शीशियाँ, प्याले, छोटी सीप तथा शंख, क्षुरप्र (खुरपी) तथा अन्य जो भी आवश्यक उपकरण है उनका संग्रह करना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

परिभाषा एवं द्रव्य वर्ग प्रकरण

परिभाषा -

" निगूढ़ानुक्तलेशोक्तसंदिग्धार्थ प्रदीपिका। सुनिश्चितार्था विबुधैः परिभाषा निगद्यते ।। "

- जिन संक्षिप्त और सांकेतिक शब्दों द्वारा शास्त्र के गुप्त अप्रकट, किंचित् प्रकट तथा संदिग्ध अर्थ का स्पष्ट और निश्चित अर्थ प्राप्त हो, उसे परिभाषा कहते है।
- गूढ़, सांकेतिक, गंभीर शब्दों का स्पष्ट ज्ञान परिभाषा से ही होता है।

आवाप - किसी भी पिघलने वाली वङ्गादि धातु को पिघलाकर उसमें किसी अन्य द्रव्य का प्रक्षेप डालने को आवाप कहते है।

पर्याय - प्रतिवाप ,आच्छादन

निर्वाप - किसी भी लोहा, ताम्र, रजतादि धातु को अग्नि में तपाकर जल, तक्र, क्वाथ, दुग्ध आदि में बुझाने को निर्वाप, निषेक और स्नपन कहते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पर्याय - निषेक और स्नपन

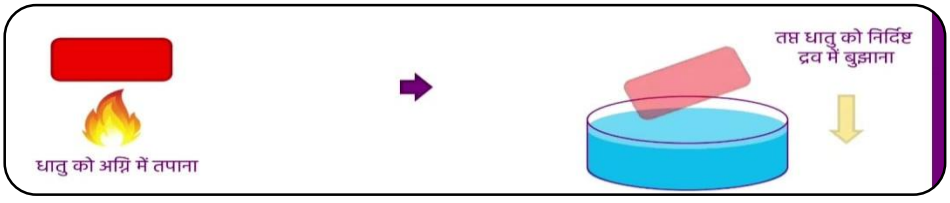

ढालन - रसकर्म विशारदों ने सोना, चाँदी आदि धातु को पिघलाकर उसको किसी भी द्रव (यथाः - दुग्ध, तैल, घी, स्वरस, क्वाथ, फाण्ट) में ढ़ाल देने को ढ़ालन कहा है।

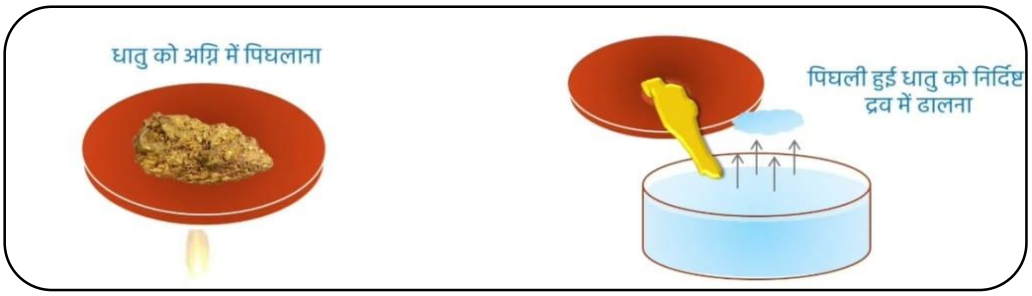

भावना -

" यच्चूर्णितस्य धात्वादेर्द्रवैः सम्पेष्य शोषणम्। भावनां तन्मतं विज्ञैर्भावना च निगद्यते। "

धातु आदि किसी भी औषध के चूर्ण को द्रव पदार्थ (जल, स्वरस, क्वाथ, फाण्ट, दुग्ध, तैल, घृतादि) के साथ खल्व में मर्दन करके सुखाने की क्रिया को भावना कहते है।

Ayurvedic Formulation

जारणा - विड और यन्त्रादि के सहयोग से पारद में दिया गया द्रुत लोहादि एवं द्रुत सत्त्व आदि का ग्रास अच्छी प्रकार से पच जाय, उसे जारणा संस्कार कहते है।

मूर्च्छना - जब पारद अपनी गुरुता एवं चञ्चलता त्यागकर कज्जली जैसा हो जाये, उसे मूर्च्छना कहते है। यह अनेक वर्ण का हो सकता है। पारद में निश्चित व्याधिनाशक शक्ति का आधान करना ही मूर्च्छना कहलाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

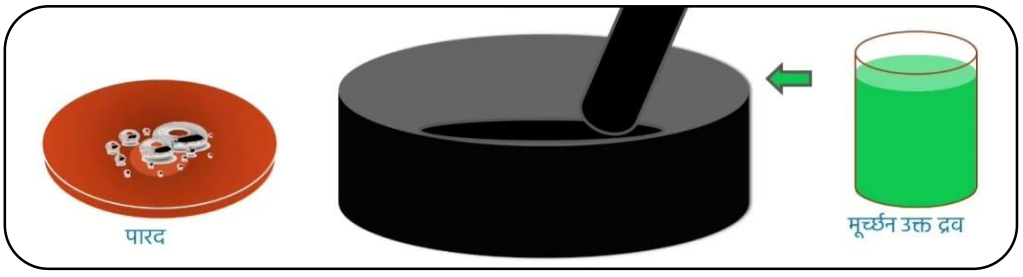

शोधन - किसी भी द्रव्य के मल को दूर करने के लिए बताई गई औषधियों के साथ मिलाकर मर्दन, स्वेदन, प्रक्षालन, निर्वाप, ढालन, आवाप, भावना, भर्जन आदि क्रियाओं के करने को शोधन कहते है।

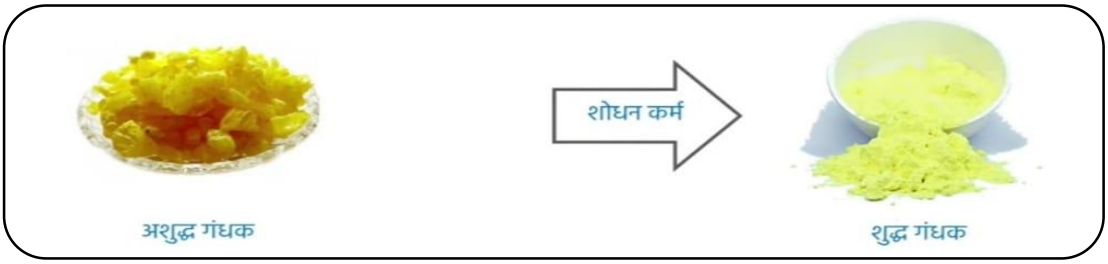

मारण - लौह धातु आदि द्रव्यों को वनस्पतियों के स्वरसादि से मर्दन करके अग्नि संयोग द्वारा भस्म करने की क्रिया को मारण कहते है।

अमृतीकरण -

- ✓ धातुओं आदि की भस्म करने के पश्चात् भी उसमें शेष रहे हुए दोषों को दूर करने वाले संस्कार को अमृतीकरण कहते है।
- ✓ अमृतीकरण से गुण की वृद्धि तथा वर्ण की हानि होती है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लोहितीकरण -

- ✓ अमृतीकरण से भस्म में वर्ण हानि होती है। अतः रक्तवर्ण उत्पन्न करने के लिए भस्म में जो क्रिया की जाय, उसे लोहितीकरण कहते है।
- ✓ जैसे - अभ्रक भस्म का अमृतीकरण करने पर वर्ण काला हो जाता है, अतः अभ्रक भस्म का लोहितीकरण किया जाता है।

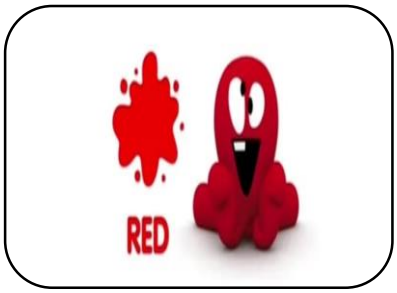

मृतलौह - किसी भी धातु की भस्म को तर्जनी और अंगुष्ठ के बीच मलने पर यदि वह भस्म अंगुली की रेखाओं में घुस जाय और पोंछने पर भी भस्म का सूक्ष्म अंश रेखाओं में रह जाये, उस भस्म को मृतलौह कहते है।

सत्त्वपातन -

क्षारवर्ग, अम्लवर्ग, द्रावकगण की औषधियों के साथ किसी धातु खनिज, रत्न या अन्य द्रव्य को मर्दन कर, गोलक बनाकर, सुखाकर, मूषा में रखकर, सत्त्वपातन कोष्ठी में तीव्र धमन करने से मूल पदार्थ का जो साररूप पदार्थ प्राप्त होता है, उसे सत्त्व कहते है।

Ayurvedic Formulation

कज्जली - द्रव पदार्थ के बिना शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक अथवा किसी धातु के साथ पारद डालकर मर्दन करने पर सुश्लक्ष्ण कज्जल की आभा वाला चूर्ण तैयार होता है, उसे कज्जली कहते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811629 , 8962265728

शुद्धावर्त - जब अग्नि अच्छी तरह प्रज्वलित होकर श्वेतवर्ण के प्रकाश के साथ चमकने लगती है तब उसे शुद्धावर्त कहते है। इस तापक्रम पर प्रायः सभी धातुओं का सत्त्व निकलता है।

बीजावर्त - जब धातुओं को द्रवित करने के लिए, धमन करने से द्रवित किये जाने वाले द्रव्य के अनुरूप ज्वाला निकले और द्रव्य (धातु) का द्रवीभूत होना प्रारम्भ हो जाये, उसे बीजावर्त कहते है।

द्रुति - विशिष्ट औषधियों के संयोग तथा तीव्रधमन के योग से स्वर्णादि धातु या अन्य खनिज द्रव्य द्रवीभूत होकर द्रवावस्था में रह जाये, तब उस द्रवीभूत अवस्था को मूल पदार्थ की द्रुति कहते है।

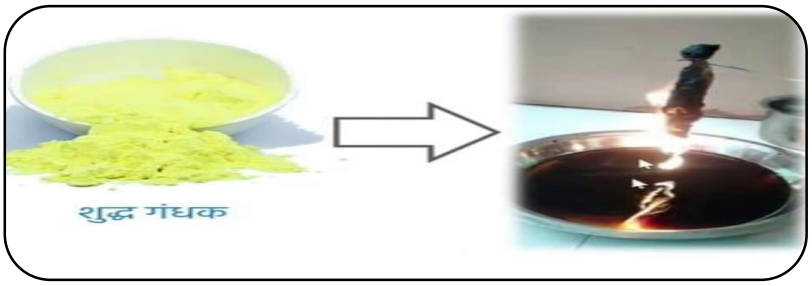

दुतिलक्षण - 5

1) पात्र में न चिपकना,
2) द्रवरूप में रहना,
3) चमकदार होना,
4) मूलपदार्थ से हल्का होना
5) पारद से अलग रहना उत्तमद्रुति के पाँच लक्षण होते है।

अपुनर्भव - किसी धातु भस्म को मित्रपञ्चक (गुड़, गुञ्जा, टंकण, मधु और घृत) के साथ मिलाकर धमन करने पर भस्म में कोई परिवर्तन न हो (पुनः धातुरूप में न आये), तो उसे अपुनर्भव भस्म कहते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निरुत्थ - किसी भी लौह आदि धातु भस्म को चांदी के टुकड़े के साथ मिलाकर मूषा में रख धमन करने से उस भस्म का थोड़ा अंश भी यदि चांदी के साथ नहीं चिपकता है, उस भस्म को निरुत्थ भस्म कहते है।

रेखापूर्ण -

- ✓ तर्जनी और अंगुष्ठ के बीच में भस्म को रगड़ने पर रेखाओं में प्रवेश कर जाय, उस मृतलौह को रेखापूर्ण भस्म कहते है।
- ✓ रेखापूर्ण सूक्ष्मता का प्रतीक है।

वारितर - यदि किसी धातुभस्म को तर्जनी और अंगुष्ठ से दबाकर निस्तरंग से जल में डालने पर तैरती रहे, उसे वारितर भस्म कहते है।

उत्तम (ऊनम) - अपुनर्भव भस्म को सूक्ष्म पीसकर जल में ड़ालने पर तैरता रहता है। तैरते हुए उस भस्म के ऊपर गुरु द्रव्य (धान्य आदि) का कण छोड़ने पर वह धान्यादि अन्न हंस के समान तैरता रहता है, तब ऐसे भस्म को उत्तम भस्म कहते है।

द्रव्यवर्ग

अम्लवर्ग - जम्बीरी नींबू, कागजी नींबू, अम्लवेतस, इमली, नारंगी, अनार, वृक्षाम्ल, बिजौरा नींबू, चांगेरी, चणकाम्ल, खट्टाबेर, करौदा, चूका इन सभी को अम्लवर्ग के अन्तर्गत माना गया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अम्लपञ्चक - अम्लवेतस्, जम्बीरी नींबू, मातुलुङ्ग नींबू, नारङ्गी और कागजी नींबू ये सब मिलकर अम्लपञ्चक कहलाते है।

क्षीरत्रय -

- ✓ अर्कदुग्ध, वटदुग्ध तथा स्नुहीदुग्ध तीनों को एकत्र लेने पर क्षीरत्रय कहलाते है,
- ✓ मारणादि के लिए प्रशस्त है।

मधुरत्रय - घृत, गुड़ तथा मधु इन तीनों द्रव्यों को एकत्र लेने पर मधुरत्रिक, त्रिमधुर या मधुरत्रय नाम से कहा जाता है।

पञ्चमृत्तिका - ईंट का चूर्ण, गैरिक चूर्ण, सैंधवलवण, भस्म (कण्डों की राख) और वल्मीक मृत्तिका (दीमक की मिट्टी) इन पाँच पदार्थों को पञ्चमृत्तिका नाम से ग्रहण किया जाता है।

उपयोग - स्वर्णशोधन में।

पञ्चगव्य - गाय का दुग्ध, गाय का दही, गाय का घी, गाय का मूत्र और गाय का गोबर रस - इन पांच द्रव्यों को एक-एक भाग ग्रहण करने पर पञ्चगव्य कहा जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पञ्चामृत - गाय का दुग्ध, गाय का दही, गोघृत, मधु और। शर्करा को समान भाग में एकत्र मिलाने पर पञ्चामृत कहा जाता है।

उपयोग - ताम्र भस्म का अमृतीकरण।

क्षारद्वय - क्षारत्रय - सर्जिक्षार एवं यवक्षार को क्षारद्वय तथा इसमें टंकण मिलाने पर क्षारत्रय कहलाता है।

क्षारपञ्चक - पलाशक्षार, मुष्ककक्षार, यवक्षार, सर्जिक्षार ,तिलक्षार

क्षाराष्टक - थूहर, पलाश, अपामार्ग, इमली, अर्क, तिलनाल, सर्जिकार , यवक्षार

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

द्रावकगण - गुज्जा, मधु, गुड़, घृत, टंकण और गुग्गुलु

मित्रपञ्चक - घृत, गुञ्जा, टंकण, मधु और गुग्गुलु

लवणपञ्चक - सौवर्चल लवण , सैंधवलवण, सामुद्र लवण, विड लवण, और रोमक लवण

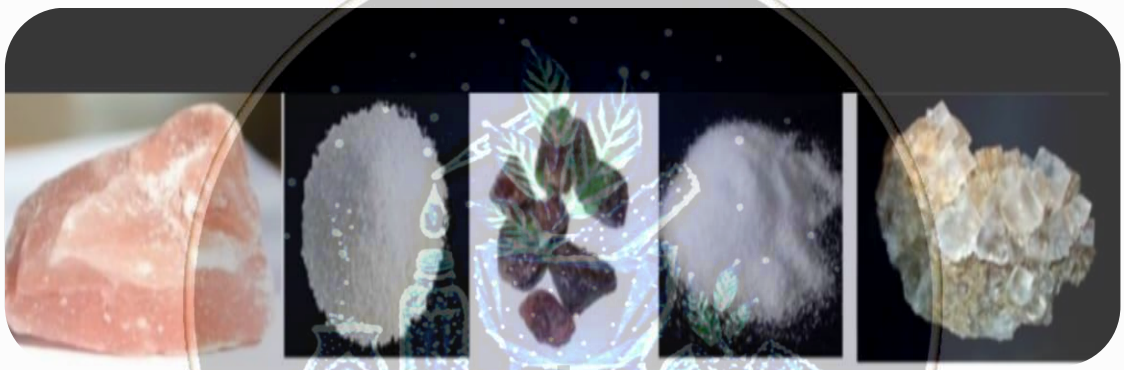

रक्तवर्ग - मञ्जिष्ठा, केशर, लाक्षा, दाडिमपुष्प, रक्तचन्दन, बन्धुक पुष्प और रक्त करवीर

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

श्वेतवर्ग - तगर, कुटज, कुन्द, श्वेतगुञ्जा, जीवन्ती, श्वेतकमलपुष्प

मूषा (Crucible)

Introduction –

रसशास्त्र के द्रव्यों को अग्नि में पकाकर उनमें अपेक्षित स्वरूप एवं गुणों की प्राप्ति करने में विभिन्न प्रकार की मृदु, मध्य, तीव्र अग्नि का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है द्रव्य को सीधा अग्नि में न रखकर किसी पात्र विशेष में रखकर अग्निप्रदान करना, जिससे द्रव्य में अपद्रव्यों का मिश्रण न हो तथा तीव्र अग्नि में भी विकृत न हो, ऐसे पात्र विशेष को मूषा कहा जाता है।

मूषा की परिभाषा -

जिस पात्र के द्वारा द्रव्यों को गर्म करने या पिघलाने पर द्रव्य स्थित दोषों को दूर किया जाय, उस यन्त्र विशेष को मूषा कहा जाता है।

पर्याय -

- **मूषा** - दोषहरणता ,
- **कुमुदी** - आकृति ,
- **क्रौञ्चिका एवं करहाटिका** - मिट्टी के प्राप्ति स्थान ,
- **पाचनी** - अग्निकर्म तथा वह्निमित्रा अग्निसहत्व को सूचित करते हैं।

उपादान द्रव्य - मृत्तिका और लौहचूर्ण

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

मूषा निर्माणार्थ उपयोगी मिट्टी -

- पीली (पाण्डुर वर्ण) ,
- भारी, बालुका रहित ,
- रक्तपीतवर्ण ,
- तीव्राग्नि को सहन करने वाली मृत्तिका श्रेष्ठ होती है।

सामान्य मूषा -

- **मिट्टी -** 4 भाग
- **जला हुआ तुष -** 1भाग
- **लकड़ी के कोयले का चूर्ण -** 1 भाग
- **घोड़े की लीद -** 1 भाग

सभी द्रव्यों को इमामदस्ते में डालकर लौह दण्ड से बारीक पीसकर जल मिलाकर निर्माण किया जाता है। उसे सामान्य मूषा कहते है।

गोस्तनी मूषा -

गाय के स्तन के समान गोल एवं लंबी मूषा जिसके पिधान (ढक्कन) की बनावट शिखाकार हो, ऐसी आकृति की मूषा बनायी जाती है। उसे गोस्तनी मूषा कहते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

उपयोग - सत्त्वों को द्रवित करने एवं शुद्ध करने में किया जाता है।

वज्र मूषा -

- **मिट्टी -** 3 भाग,
- **शण के रेशे -** 2 भाग
- **घोड़े की लीद** - 2 भाग
- **खड़िया मिट्टी -** 1 भाग
- **लोह किट्ट -** 1/2 भाग

सभी को कूटपीस कर बारीक चूर्ण करके मूषा बनायी जाती है। उसे वज्र मूषा कहते है।

उपयोग - सत्त्वपातन

महा मूषा -

जिस मूषा का नीचे का तलभाग कूर्परसदृश संकीर्ण, ऊपर वाला भाग क्रमशः विस्तृत हो तथा देखने पर मोटे बैंगन की तरह स्थूल हो, उसे महामूषा कहते है।

उपयोग - अभ्रकसत्त्व निष्कासन, सत्त्व को पुट देने के लिए , सत्त्वद्रावण एवं लौह द्रावण में।

योग मूषा -

कोयले एवं तुष की राख, कालीमिट्टी, वल्मीक मिट्टी तथा विड़ द्रव्यों - समान भाग

सभी द्रव्यों को एकत्र कूटपीसकर मूषा बनाकर उसके अन्दर-बाहर विड का लेप कर मूषा बनायी जावें, उसे योग मूषा कहते है।

उपयोग - सिद्ध हुआ पारद विशेष गुणकारी होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

वृन्ताक मूषा -

आकृति - वृन्ताक (बैंगन) के समान बनाकर

- 12 अंगुल की नली लगावें,
- ऊपर का भाग - धत्तूरपुष्प के समान हो
- और यह भाग मूषा मुख से जुड़ा हुआ हो,
- जिसकी परिधि 8 अंगुल हो एवं नली दोनों तरफ खुली हो, उसे वृन्ताक मूषा कहते है।

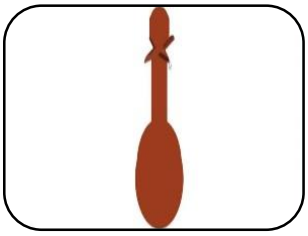
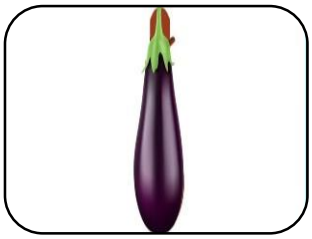

उपयोग - खर्पर आदि मृदु द्रव्यों के सत्त्वपातन में किया जाता है।

मल्ल मूषा -

मिट्टी के दो मजबूत शरावों को आमने-सामने जोड़कर जब सम्पुट की आकृति बनायी जाती है, उसे मल्ल मूषा कहते है।

उपयोग - पर्पटी आदि रसों के स्वेदन मे।

पक्व मूषा -

कुम्हार द्वारा निर्मित मजबूत भाण्ड के स्वरूप की मूषा बनाकर दृढ़ाग्नि से पकाया जाता है, उसे पक्व मूषा कहते है।

उपयोग - पोट्टली रस को पकाने में।

सन्धिबन्धन -

- दो पात्रों के सन्धिस्थल को जोडना सन्धि बन्धन कहलाता है।
- शराव, मूषा आदि की सन्धि को मण्डूर चूर्ण और मिट्टी आदि से
- लेप करके सन्धि का बन्धन किया जाता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मुद्रा -

जब पारद की मूर्च्छना या जारणा करते हैं तो पाक होने पर काँच की शीशी के मुख को बन्द करना ही मुद्रा कहलाता है।

हठ मुद्रा -

हठ का अर्थ - अतितीव्र अग्नि में भी इसके द्वारा मूषा का मुख बंद करने पर पारद का क्षय नही होता हैं।

- **चुम्बक लौह सूक्ष्म चूर्ण + सूअर का रक्त** - समान मात्रा

लेकर कल्क जैसा करके इमामदस्ता में सूर्यास्त से सूर्योदय पर्यन्त सम्पूर्ण रात्रि निरन्तर कूटते रहने पर यह मोम जैसा हो जाता है। इसे ही हठमुद्रा कहते है।

चुल्लिका -

पर्याय- अङ्गारधानिका, हसन्ती, हसन्तिका अङ्गारशकटी

छोटा-बड़ा, मिट्टी, ईंट या लौहे का चूल्हा बनाकर उसमें लकड़ी, कोयला आदि ईंधन को जलाने के लिए जिस साधन का हम प्रयोग करते है, उसे चुल्लिका कहते है।

उपयोग - मृदु द्रव्यों को पकाने एवं वङ्ग आदि को पिघलाने में किया जाता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पुट

परिभाषा -

रस, महारस, उपरस, साधारण रस, धातु, उपधातु, रत्न, उपरत्न आदि द्रव्यों के पाक या भस्म करने के लिए अग्नि के मान को सूचित कराने वाले माध्यम को पुट कहते हैं।

अग्नि के निश्चित प्रमाण को बन्योपल एवं तुषो द्वारा प्राप्त किया जाता है।

पुट का प्रयोजन एवं परिणाम -

- पुट देने पर लोहादि धातु भस्म होकर अपुनर्भव एवं उसके गुणों में वृद्धि हो जाती है।
- रेखापूर्ण एवं वारितरत्व गुण आ जाते है।
- पुट के प्रभाव से भारी पत्थर भी हल्का होकर शरीर में शीघ्रता से फैलने वाला एवं अग्नि को प्रदीप्त करने वाला हो जाता है।
- जारित पारद की अपेक्षा पुटपाक द्वारा निर्मित लौहादि भस्में अधिक गुणवान् हो जाती है।
- पुट द्वारा पाचित औषधियाँ निरुत्थ, वारितर, दीपन- पाचन गुणों से युक्त हो जाती है।
- पुट द्वारा भस्म में विशेष गुण प्राप्त होते है।

Ayurvedic Formulation

पुट का प्रभाव -

1) दोषहानि
2) गुणोदय
3) निरुत्थत्व
4) दीपन
5) वारितरत्व
6) रेखापूर्णता
7) शीघ्रव्याप्ति
8) सूक्ष्मता

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पुट संख्या -

- ✓ **अभ्रक भस्म के रसायनगुण में** - 1000पुट
- ✓ **रोगनाशक गुण प्राप्ति के लिए** - 1 से 100 पुट
- ✓ **वाजीकरण के लिए** - 10 से 500 पुटों

पुटपाक विधि - भस्म करने योग्य शुद्ध द्रव्यों को भावना देकर छोटी-छोटी चक्रिका (टिकिया) बनाकर सुखा देते है।

- फिर शराव सम्पुट में बन्द करके सम्पुट का सन्धि बंधन कर अग्नि देते है।
- स्वाङ्गशीत होने के पश्चात् सावधानी से शराव को खोलकर चक्रिकाओं (टिकियाओं) को निकालकर चूर्ण करके भस्म बनाना चाहिए।

पुटक्रम

भावना → चक्रिका → शराव सम्पुटीकरण → स्वाङ्गशीत → चूर्ण → भस्म

पुट भेद -

ताप ऊर्जा के स्रोत के आधार पर - तीन

1) सूर्य पुट
2) चन्द्रपुट
3) अग्नि पुट

अग्नि पुट के आधार पर - अनेक प्रकार के होते है।

1) महापुट,
2) गजपुट,
3) वाराहपुट,
4) कुक्कुटपुट,
5) कपोतपुट (लघुपुट),
6) भूधरपुट,
7) बालुकापुट,
8) लावकपुट,
9) गोबर पुट आदि

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 8319811628 , 8962265728

सूर्यपुट -

- किसी भी द्रव्य को भावना देने वाली औषधियों के स्वरस कषायादि से भावित या तर करके धूप में रखकर सुखाने की विधि को सूर्यपुट कहते है। इसे रौद्रपुट या भानुपाक भी कहते हैं।

चन्द्रपुट -

- चन्द्रमा की किरणों से प्राप्त होने वाली ताप ऊर्जा के लिए भस्मीय द्रव्य को लेकर भावना देते हुए चन्द्रमा की चांदनी में रखा जाता है। उसे चन्द्रपुट कहते है।

गोबरपुट -

- गोशाला में गाय के खुर से मर्दित गोबर का शुष्कचूर्ण ही गोमय कहलाता है।
- पारद भस्म निर्माण के लिए गोबर या तुषों द्वारा अग्नि देने को गोबरपुट कहते है।

उपयोग - रसभस्म सिद्ध करने में।

लावकपुट -

- एक पल की मात्रा में शुष्क गोमयचूर्ण या तुष के ऊपर द्रव्ययुक्त मूषा को रखकर अग्नि प्रतप्त करके जो पुट देते हैं, उसे लावकपुट कहते हैं।

उपयोग - अत्यन्त मृदु द्रव्यों के पाक में।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कुक्कुटपुट -

- भूमि में 2 वित्ता (वितस्ति) लंबा, चौड़ा एवं गहरा गड्ढा खोदकर उसके आधे भाग में ऊपले भरकर सम्पुट को रखकर, फिर शेष उपले भरकर अग्नि दी जाती है। इसे कुक्कुटपुट कहते है।

उपयोग - स्वर्णभस्म एवं रजतभस्म निर्माण में किया जाता है।

कपोतपुट -

- भूमि के अन्दर एक छोटा गड्ढा खोदकर आठ वन्योपलों द्वारा [औषधियुक्त पारद को भस्म करने के लिए शराव सम्पुट कर अग्नि देने को कपोतपुट कहते है।

वाराहपुट - (500 उपल)

- एक अरति (22 अंगुल) लम्बा, चौड़ा और गहरा चौकोर गड्ढा खोदकर **नीचे 350 वन्योपल**, मध्य में शराव सम्पुट तथा **150 उपलें ऊपर** से रखकर अग्नि दी जाती है, इसे वाराहपुट कहते है।

उपयोग - अभ्रक, ताम्र, रजत, स्वर्णमाक्षिक भस्म बनाने में।

गजपुट - (1000 उपल)

- राजा के हाथ के बराबर (30 अंगुल) लम्बा, चौड़ा और गहरा चौकोर गड्ढा खोदकर **750 वन्योपल कण्ठ** तक भरकर, मूषा या शराव सम्पुट को रखकर **ऊपर 250 वन्योपल** भर कर अग्नि जला देते है, इसे गजपुट कहते है।
- 1000 उपलों की आवश्यकता होती है।

महापुट - (1500 उपल)

- भूमि में दो-दो हाथ (48 अंगुल = 91 से. मी.) लंबा, चौड़ा और गहरा गड्ढा खोदकर **1000 उपलें नीचे** डालकर, फिर शराव सम्पुट रखकर **ऊपर से शेष 500 उपलें रखकर** अग्नि प्रज्वलित की जाती है, इसे महापुट कहते है।

उपयोग - लौह, अभ्रक, ताम्र आदि द्रव्यों की भस्म बनाने में किया जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कुम्भपुट -

- एक दृढ़ बडा मिट्टी का घड़ा लेकर उसमें तुष भरकर मध्य में शराव सम्पुट रखकर, फिर तुष भरकर अग्नि दी जाती है, इसे कुम्भपुट या भाण्डपुट कहते है।

उपयोग - हरताल, सोमल आदि की भस्म बनाने में किया जाता है।

बालुकापुट -

- औषधियुक्तमूषा के ऊपर, नीचे चारों ओर से प्रतप्त बालुका से ढककर जो पुट दिया जाता है, उसे बालुकापुट कहते है।

उपयोग - हरताल, सोमल आदि की भस्म बनाने में किया जाता है।

भूधरपुट -

- भूमि गर्त में औषधद्रव्य युक्त मूषा रखकर उसके चारों ओर दो अंगुल मिट्टी या बालू को रखकर ढक दिया जावें, फिर ऊपर वन्योपल बिछाकर अग्नि दी जाती है। इसे भूधरपुट कहते है।

उपयोग - पारद एवं संखिया भस्म बनाने में किया जाता है।

लघुपुट-

- भूमि में एक छोटा गड्ढा खोदकर आठ वन्योपलों द्वारा पारद युक्त शराव को सम्पुट में बन्दकर अग्नि दी जाती है, उसे लघुपुट कहते है।

Ayurvedic Formulation

पुट सख्या	प्रमाण	वन्योपल	उपयोग
महापुट	द्विहस्त (91cm)	1500 (शा. - 30)	पारद, ताम्र, त्रिवंग, स्वर्ण, वज्र के भस्म हेतु
गजपुट	राजहस्त (57cm)	1000	अकीक, अभ्रक, कर्पद, कांस्य, ताम्र, नाग, नीलम, शंख, पारद ताक्ष्र्य, प्रवाल, माणिक्य, मण्डूर की भस्म
अर्धगजपुट (आचार्य यादव जी)			ताम्र एवं वंग मारण हेतु
वाराह / क्रोडपुट	1 अरनि (42cm)	500 (कुलकर्णी-150)	व्रज, अभ्रक, रजत, ताम्र, स्वर्णमाक्षिक भस्म हेतु
कुक्कुट पुट	2 बितस्ति	100 (कुलकर्णी-10)	तुत्थ, ताक्ष्र्य, पारद, मृद्वारश्रृंग, लौह, स्वर्णमाक्षिक निर्माण हेतु

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कोष्ठी

उद्देश्य - तीव्राग्नि प्राप्त करना होता है।

सत्वपातन कोष्ठी : -

- सत्त्वपातन एवं धातु द्रावण के लिए द्रव्य के अनुसार तीव्र एवं तीव्रतर अग्नि की आवश्यकता होती है।
- अभ्रक तथा माक्षिक आदि द्रव्यों से सत्त्व प्राप्त करने के लिए एवं निकाले हुए सत्त्वों को शुद्ध करने के लिए विशेष प्रकार की अलग अलग भट्टियों का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए भिन्न भिन्न आकार प्रकार की कोष्ठियाँ सुविधानुसार बनायी जाती है।

रसग्रन्थों में पाताल कोष्ठी, गार कोष्ठी एवं अङ्गार कोष्ठी का वर्णन मिलता है।

पाताल कोष्ठी -

- सबसे पहले दृढ़ एवं समतल जमीन में 12 अंगुल गहरा एवं 12 अंगुल चौड़ा गोल आकार का गढ्ढा खोदे।
- अब उस गड्ढे के बीचों बीच में 4 अंगुल गहरा एवं उतना ही गोल एक छोटा गढ्ढा बनाये।
- अब उस छोटे गड्ढे में अन्दर से बाहर की ओर भूमि की सतह तक तिरछी नली जोड़ दी जाती है।
- अब उस छोटे गड्ढे के मुख पर 5 छिद्र युक्त मिट्टी का प्याला रखकर नली के बाहरी सिरे को धमन यन्त्र से जोड़ दिया जाता है।
- फिर कोष्ठी को कोयलों से भरकर उसके ऊपर द्रव्ययुक्त मूषा रखकर अग्नि जलाकर धमन यन्त्र से धमन किया जाता है। इस कोष्ठी को जमीन में गर्त बनाकर तैयार करने के कारण पाताल कोष्ठी कहते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

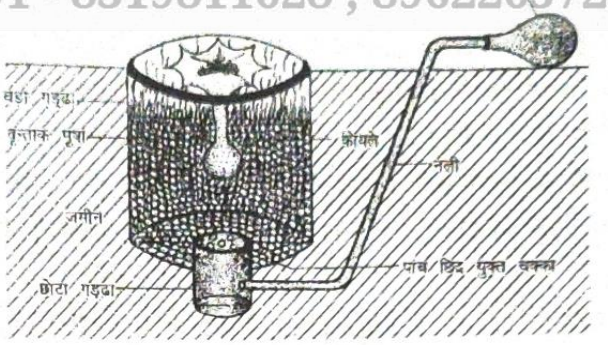

पाताल कोष्ठी

उपयोग - मृदु द्रव्यो का सत्वपातन किया जाता है।

गारकोष्ठी -

- सबसे पहले समतल भूमि के अन्दर 12 अंगुल गहरी एवं 9 अंगुल चौड़ी मुखवाली कोष्ठी तालाब के कीचड़ की मिट्टी से बनावें
- अब उस कोष्ठी के तलभाग से 4 अंगुल ऊपर कोष्ठी की अन्दर की दीवार से सटाकर एक गोल वलय लगाते है।
- अब इस वलय के सहारे एक छिद्रयुक्त जाली रखी जाती है। इस जाली के ऊपर कोयला रखकर वंकनाल की सहायता से धमन किया जाता है। इसे ही गार कोष्ठी कहा जाता है।

उपयोग - स्वर्ण रजत में अन्य धातु की मिलावट होने पर उसको दूर कर शुद्ध करने में किया जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अंगारकोष्ठी -

- सबसे पहले दृढ़ समतल भूमि में राजा के हाथ के बराबर 30 अंगुल ऊँची तथा 15 अंगुल लम्बी और चौड़ी चतुष्कोण भट्टी बनावें।
- अब उस भट्टी को मिट्टी से अन्दर बाहर लेपकर सुन्दर बना लें।
- अब इस भट्टी की एक दीवार में जमीन से चार अंगुल ऊपर गोल छिद्र बनाया जावें। जिसमें धमन यन्त्र की समकोण नली को जोड़ देते है।

- अब कोष्ठी में लकड़ी या पत्थर का कोयला डालकर औषधियुक्त मूषा को ऊपर रखकर उसके बराबर तक कोयला भरकर धमन यन्त्र से धमन किया जाता है। इसे अङ्गारकोष्ठी कहते है।

उपयोग - द्रव्यों के ढालन एवं विशेषरूप से सत्त्वपातन में किया जाता है।

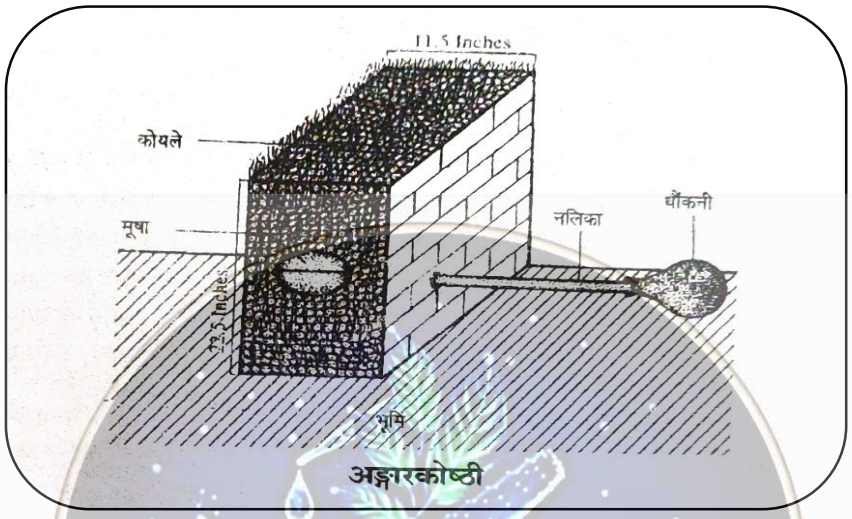

अङ्गारकोष्ठी

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पारद प्रकरण

रसशास्त्र में **रस** शब्द से **पारद** का ही ग्रहण किया जाता है।

शास्त्र में इसकी प्रधानता के कारण ही इसे **रसशास्त्र का नायक** भी कहा जाता हैं।

पारद के पर्याय -

रसेन्द्र ,रसराज, रस ,शिवबीज, चपल, इंद्र , रसलोह , रसोत्तम , अमृत,महातेज

1) **रस -**

रसनात् सर्वधातूनां रस इत्यभिधीयते। जरारुङ्मृत्युनाशाय रस्यते वा रसो मतः ।।

अर्थात् स्वर्णादि सभी धातुओं एवं अभ्रकादि महारसों को भक्षण करके सभी आदि की शक्ति स्वयं में लेने के कारण ही रस कहते हैं। जरा, रोग, मृत्यु को नष्ट करने में समर्थ होने से भी इसे रस कहते है।

2) **रसेन्द्र -** रसों एवं उपरसों का राजा होने के कारण इसे रसेन्द्र कहते है।

3) **सूत -** देह सिद्धि एवं लौह सिद्धि को देने वाला होने के कारण इसे सूत कहते है।

4) **पारद -** रोगरूपी कीचड़ वाले समुद्र में डूबे हुए मनुष्यों को पार करने वाला होने के कारण इसे पारद कहते हैं।

5) **मिश्रक -** सभी धातुओं का तेज मिश्रित हो, उसे मिश्रक कहते है तथा इसे अनेक प्रकार का फल देने वाला कहा गया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पारद के भेद -

" रसो रसेन्द्रः सूतश्च पारदोमिश्रकस्तथा। इति पञ्चविधो जातः क्षेत्रभेदेन शंभुजः ।। "

1) रस
2) रसेन्द्र
3) सूत
4) पारद
5) मिश्रक

1) **रस -** रक्तवर्ण , सर्वदोषमुक्त , रसायन , जरा व रोगनाशक होता है।

- **उपयोग** - देवता अजर - अमर हुये।

2) **रसेन्द्र -** श्याववर्ण , दोषमुक्त , रूक्ष , अतिचञ्चल , रसायन होता है।

- **उपयोग -** नाग जरा व मृत्यु से मुक्त हुये।

3) **सूत -** किञ्चित पीतवर्ण , रूक्ष , दोषों से युक्त होता है।

अष्टादश संस्कारों से सुसंस्कारित होने पर शरीर को लौह सदृश दृढ़ बना देता है।

4) **पारद** - श्वेतवर्ण का , चञ्चल होने से विविध औषधि योगों में प्राधान्येन मिलकर विविध रोगों को नष्ट करता है

5) **मिश्रक** - मयूरपंख चन्द्रिकावत् होने से अष्टादश अच्छी तरह रोगनाशादि कार्य को साधने वाला होता है।

भूगर्भ में पारद दो रूपों में प्राप्त होता हैं।

1) मुफ्त स्वरुप
2) यौगिक स्वरुप

1) **हिंगुल - (cinnabar - Hgs)**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Main source (70-80%)

- हंसपाद हिंगुल(Cinnabar) - जपाकुसुम वर्ण श्रेष्ठ
- चर्मार हिंगुल(Meta Cinnabar) - कृष्ण वर्ण
- प्रवालाभ हिंगुल (Coral ore) - स्वेत रेखा
- दरद हिंगुल (Hepatic Cinnabar) - यकृतआकार
- दैत्येन्द रक्त - 75% Hg

2) गिरिसिन्दूर (Hgo) - Brick ore (Red oxide of mercury)

3) कैलोमल (Hg2cl2)

4) लिविंगस्टोननाइट (Living stonite) - 2Sb2S3Hgs

5) मौट्रोयडाइटHgo

ग्राह्य - अग्राह्य पारद के लक्षण -

ग्राह्य पारद के लक्षण -

अन्तः सुनीलो बहिरुज्जवलयो यो मध्याह्न सूर्यप्रतिमप्रकाशः । शस्तोऽथ धूम्र परिपाण्डुरश्च चित्रो न योज्यो रसकर्मसिद्धये ।। (र.म. 1/15)

अन्तस्तल से नीलाभ , बाहर से उज्जवल वर्ण एवं मध्याह्न के सूर्य की तरह प्रकाशित हो , वह पारद श्रेष्ठ होता है।

अग्राह्य पारद के लक्षण -

धूम्रवर्ण पाण्डुवर्ण और कई वर्णों से युक्त पारद रसकर्म सिद्धि के लिए ग्रहण योग्य नहीं होता है।

Ayurvedic Formulation

पारद के दोष -

- र. र .समु. - 12
- र. त. - 8
- शुद्ध पारद सर्वव्याधिनाशक , जरावस्थानाशक एवं मृत्यु का निवारण करता है ,
- किन्तु अशुद्ध पारद भयंकर दोष करने वाला विष होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811629 , 8962265728

पारद में कुल 12 दोष होते हैं।

इसके अतिरिक्त सप्तकंचुको का भी सात औपाधिक दोषों में समावेश हो जाता है।

नैसर्गिक / प्राकृतिक दोष	यौगिक / व्यापारिक दोष	औपाधिक / सप्तकंचुक दोष
1) विष - मृत्यु	1) नागज - जाड्य / वण	1) पर्पटी (भूमिज) - कुष्ठ
2) वह्नि - सन्ताप	2) वंगज - आध्मान, कुष्ठ	2) पाटनी (गिरिज) - जाड्य
3) मल - मूर्च्छा		3) भेदी (वारिज) - वातव्याधि, मलभेदन
		4) द्रावी (नागज) धातुओं की द्रवित मल बढ़ाना
		5) मलकारी (नागज)
		6) अंधकारी (वंगज) - स्वरपारुष्य , कौआन्तर
		7) ध्वांक्षी (वंगज)

1) **नैसर्गिक दोष -** पारद एक खनिज द्रव्य होने से भूगर्भ में पारद के साथ अन्य धातुओं का मिश्रण होना स्वाभाविक है, अतः इस दोष को नैसर्गिक दोष कहा जाता है।

नैसर्गिक दोष - तीन

1) विष - मृत्यु
2) वह्नि - संताप
3) मल - मूर्च्छा

2) **यौगिक दोष -** मिलावट के कारण हुए दोषों को यौगिक दोष कहते हैं।

यौगिक दोष - दो

1) नाग - जड़ता
2) वङ्ग - आध्मान तथा कुष्ठ रोग को उत्पन करता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) **औपाधिक दोष: कंचुक दोष -** दोषों के कारण पारद पर एक प्रकार का आवरण सा प्रतीत होता हैं ।यह आवरण पारद की ऊपरी सतह को आवृत्त किए रहता हैं ।इस आवरण को ही औपाधिक दोष कहते हैं।

पारद में पूर्वोक्त पाँच दोषों के अतिरिक्त

1) भूमिज
2) गिरिज
3) वारिज
4) नागज - 2
5) वङ्गज - 2

सात औपाधिक दोष (सप्तक शुक दोष) होते है।

1) **भूमिज -** पारदीय खनिज भूगर्भ में जिस मिट्टी के सम्पर्क में रहता है, उस मिट्टी में से कुछ दोष पारद में आ जाने से भूमिज दोष कहलाते हैं।

2) **गिरिज -** पारदीय खनिज भूगर्भ पाषाणों के सम्पर्क से दोष आ जाने से गिरिज दोष कहलाते हैं।

3) **वारिज -** पारदीय खनिज के सम्पर्क में आये हुए जल के कारण दोष पारद में आने से वारिज दोष कहलाते हैं।

4) **नागज -** पारद का सीसे के सम्पर्क से आगत दोष नागज दोष कहलाते हैं तथा संख्या में दो होते हैं।

5) **वग्ङज -** वंग के सम्पर्क से पारद में आगत दोष वङ्गज दोष कहलाते हैं तथा संख्या भी दो होती है।

सप्तकंचुक दोष -

" पर्पटी पाटनी भेदी द्रावी मलकरी तथा। अन्धकारी तथा ध्वांक्षी विज्ञेयाः सप्तकचुकाः ।। "

1) पर्पटी (भूमिज) - कुष्ठ
2) पाटनी (गिरिज) - जाड्य
3) भेदी (वारिज) - वातव्याधि, मलभेदन
4) द्रावी (नागज) - धातुओं की द्रवित मल बढ़ाना
5) मलकारी (नागज) -
6) अंधकारी (वंगज) - स्वरपारूष्य, कौआन्तर
7) ध्वांक्षी (वंगज) -

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पारद का शोधन

शोधन - किसी द्रव्य के अन्दर स्थित अशुद्धि का निवारण कर्म करने को शोधन कहते है।

- अशुद्ध पारद के सेवन से मूर्च्छा, हिक्का, ज्वर, अरति, कास, श्वास, भ्रम, मोह, दाह, कम्प रोग उत्पन्न हो जाते है।
- अतः पारद में स्थित हानिकारक नैसर्गिक एवं कञ्चुक दोषों के निवारण हेतु, आधिव्याधि विनाशार्थ, रसयोगों में प्रयोगार्थ पारद का शोधन आवश्यक होता हैं।
- दोषयुक्त पारद यमराज के समान घातक होता है, जबकि शोधन के बाद पारद **अमृत के समान लाभदायक** होता है।

पारद का शोधन - 2 विधि

1) **सामान्य शोधन -** केवल रोगनाशक होता हैं।
2) **विशेष शोधन -** पारद रसायनकर्म एवं रोगनाशक दोनों कर्म करने में समर्थ होता है।

पारद का सामान्य शोधन -

1st method - **अशुद्ध पारद + चूना (सुधा रज) (same quantity)**

⇩

3 days खल्व में मर्दन

⇩ द्विगुणवस्त्र से छानकर

पारद +छिलका रहित लहसुन + सैधव लवण (1/2 भाग)

⇩

कृष्ण वर्ण तक मर्दन करके जल से प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद प्राप्त होता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2nd method - **अशुद्ध पारद + घृतकुमारी, चित्रक, रक्तसर्षप + त्रिफला क्वाथ**

⇩ 3 days मर्दन

प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद (सप्त मलो से मुक्त) प्राप्त होता है

3rd method - **अशुद्ध पारद + लहसुन तथा सैंधव लवण**

⇩ 7 days मर्दन

कांजी से प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद प्राप्त होता है

पारद का विशेष शोधन -

पारद के अन्तर्गत विष, वह्नि, मल, नाग, वङ्ग, चापल्य, गिरि एवं असह्याग्नि आदि दोषों का निवारण करने के लिए अष्टादश संस्कार के अलावा जो विधि शोधन हेतु की जाती है, उसे पारद का विशेष शोधन कहते है।

1) नाग दोष निवारणार्थ विधि -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

गृहधूम, ईंट का चूर्ण, हरिद्रा चूर्ण तथा सूक्ष्म कटा हुआ ऊन चूर्ण + पारद

⇩ 1 days मर्दन (घृतकुमारी स्वरस)

काञ्जी से प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद प्राप्त होता है

2) वङ्ग दोष निवारणार्थ विधि -

इन्द्रायण, अंकोल ,हरिद्राचूर्ण + पारद

⇩ मर्दन (घृतकुमारी स्वरस)

काञ्जी से प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद (वङ्ग दोष नष्ट हो जाता है) परपर होता है

3) अग्नि दोष निवारणार्थ विधि -

चित्रकमूल चूर्ण + पारद

⇩ मर्दन (घृतकुमारी स्वरस)

काञ्जी से प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद (अग्नि दोष नष्ट हो जाता है) प्राप्त होता है

4) मल दोष निवारणार्थ विधि -

अमलतास त्वक् चूर्ण + पारद

⇩ मर्दन (घृतकुमारी स्वरस)

काञ्जी से प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद (मल दोष नष्ट हो जाता है) प्राप्त होता है

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

5) चापल्य दोष निवारणार्थ विधि -

कृष्णधत्तूर बीज या पञ्चाङ्ग + पारद

⇩ मर्दन (घृतकुमारी स्वरस)

काञ्जी से प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद (चापल्यदोष नष्ट हो जाता है) प्राप्त होता है

6) विष दोष निवारणार्थ विधि -

त्रिफलाचूर्ण + पारद

⇩ मर्दन (घृतकुमारी स्वरस)

काञ्जी से प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद (विषदोष नष्ट हो जाता है) प्राप्त होता है

7) गिरि दोष निवारणार्थ विधि -

पारद + त्रिकटु

⇩ मर्दन

प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद (गिरिदोष नष्ट हो जाता है) प्राप्त होता है

Ayurvedic Formulation

8) असह्याग्निदोष निवारणार्थ विधि -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

गोक्षुर चूर्ण + पारद

⇩ मर्दन

प्रक्षालन करने पर शुद्ध पारद (असह्याग्निदोष नष्ट हो जाता है) प्राप्त होता है

दोष	विशेष शोधन
विष	त्रिफला चूर्ण
वह्नि	चित्रकमूल चूर्ण
मल	अमलतास त्वक् चूर्ण
नाग	गृहधूम, ईंट का चूर्ण, हरिद्रा चूर्ण तथा सूक्ष्म कटा हुआ ऊन चूर्ण
वंग	इन्द्रायण, अंकोल ,हरिद्राचूर्ण
चापल्य	कृष्णधत्तूर बीज या पञ्चाङ्ग
असह्याग्नि	गोक्षुर चूर्ण
गिरि	त्रिकटु

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पारद के संस्कार

संदर्भ ग्रंथ -

- रस रत्न सम्मुच्य **18**
- रस तरंगिणी **8**

संस्कार - पारद में विशिष्ट गुणों की वृद्धि के लिए जो कर्म किया जाता हैं उसे संस्कार कहते हैं।

पारद के अष्टविध संस्कार (8)

" स्वेदनं मर्दनं चैव मूर्च्छनोत्थापने तथा। पातनं बोधनं दीपनञ्चेति संस्काराः सूतस्याष्टौ प्रकीर्तिताः।। "

संस्कार	यंत्र
स्वेदन	दोलायंत्र
मर्दन	खरल यंत्र
मूर्च्छन	तप्त खरल यंत्र
उत्थापन	दोलायंत्र
पातन	पातन यंत्र
रोधन (बोधन)	दोलायंत्र
नियामन	दोलायंत्र
दीपन	दोलायंत्र

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Note –

- 1 से 5 संस्कारों से पारद सर्वदोषमुक्त हो जाता है,
- शेष 6 से 8 तक तीन संस्कारों द्वारा पारद में बल एवं तेज की वृद्धि होती है।
- आठ संस्कार ही सर्वशः उपयोगी है।

(18) संस्कार -

स्वेदन	रोधन (बोधन)	गर्भद्रुति	संक्रामण
मर्दन	नियामन	बाह्यद्रुति	वेध
मूर्च्छन	दीपन	जारणा	भक्षण
उत्थापन	गगनभक्षणमान	रञ्जन	
पातन	चारण	सारण	

1) स्वेदन संस्कार - यंत्र - दोला यंत्र

परिभाषा -

- क्षार एवं अम्ल औषधियों के साथ पारद को दोला यन्त्र में पकाकर जो कर्म किया जाता है , उसे स्वेदन कहते है।
- 1 भाग पारद +त्रिकटु , चित्रकमूल सैधव लवण (1/16) भाग लेकर कल्कबनाकर उसमें पारद को रख दोलायंत्र विधि से कांजी में तीन तक मृदु अग्नि पर पकाने को स्वेदन संस्कार कहते हैं।

परिणाम - **" मलशैथिल्यकारकम् "**

पारद का मल शिथिल हों जाता है।

2) मर्दन संस्कार -

यंत्र - तप्त खल्व

परिभाषा -

- मर्दन संस्कार कथित औषधि अम्लद्रव्य कांजी के साथ पारद को घोटने की क्रिया को मर्दन कहते हैं।
- एक लौहे की खल्व में गुड, जला हुआ ऊन, सैंधवलवण, गृहधूम, ईंट का चूर्ण तथा राई (1/16) भाग पारद (1भाग) लेकर खल्व में डालकर तीन दिन तक मर्दन करने को मर्दन संस्कार कहते है।

परिणाम - **" बहिर्मलविनाशनम् "**

पारद के बाह्य मल का नाश होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes +91 - 8319811628 ,8962265728

3) मूर्च्छन संस्कार -

यंत्र - खल्व यंत्र

परिभाषा - मूर्च्छन संस्कारार्थ उक्त औषधियों के साथ पारद को नष्ट पिष्ट हो जाने तक घोंटने की प्रक्रिया को मूर्च्छन कहते हैं।

मूर्च्छन - पारद का क्रमश -

- ✓ घृतकुमारी - मलदोष नष्ट हो जाता है
- ✓ त्रिफला - अग्निदोष नष्ट हो जाता है
- ✓ चित्रक - विषदोष नष्ट हो जाता है

अतः घृतकुमारी का गूदा, त्रिफला और चित्रकमूल का चूर्ण 1/16भाग पारद 1भाग लेकर सप्त बार मर्दन करने से पारद का मूर्च्छन संस्कार हो जाता है।

परिणाम - **" नष्टपिष्टत्वकारकं मूर्च्छनं, सर्वदोषविनाशनम् "**

पारद का विष, वह्नि और मल आदि सर्वदोष नष्ट हो जाते है , पारद को नष्ट पिष्ट करना ही मूर्च्छन है।

Ayurvedic Formulation

4) उत्थापन संस्कार -

यंत्र - दोलायंत्र

परिभाषा - मूर्च्छन संस्कार के क्रम में पारद नष्ट पिष्ट होकर मूर्च्छित हो जाता है। उसे पुनः अपने स्वरूप में लाने की क्रिया को उत्थापन कहते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 ,8962265728

- ➢ स्वेदन, आतप, प्रक्षालन, वस्त्रनिष्पीडन एवं पातन आदि क्रियाओं द्वारा पारद को अपने स्वरूप में लाने की क्रिया को उत्थापन संस्कार कहते है।
- ➢ पारद (1भाग) + सैंधव, शहद (1/16) काञ्जी लेकर तीन दिन तक दोला यन्त्र विधि द्वारा स्वेदन कर उष्ण जल से प्रक्षालन कर लेवें।

परिणाम - **" मूर्च्छा व्यापत्ति नाशनम् "**

पारद की मूर्च्छा नष्ट होकर पारद अपने पूर्व रूप में आ जाता है।

5) पातन संस्कार -

यंत्र - पातना यंत्र

परिभाषा -

- पातन संस्कार हेतु कथित औषधियों द्वारा पारद का मर्दन करके ऊर्ध्व, अधः एवं तिर्यपातन यन्त्र द्वारा पारद को प्राप्त करना पातन कहलाता है।

पातन के प्रकार - पारद का पातन **तीन प्र**कार होता है

1) ऊर्ध्व पातन
2) अधः पातन
3) तिर्यक् पातन

- तीन भाग पारद + एक भाग ताम्र चूर्ण + नीबू रस का खल्व में मर्दन कर पिष्टी बना ले।
- नींबू स्वरस के शुष्क हो जाने पर विद्याधर यंत्र या डमरू यंत्र द्वारा उर्ध्वपातन तथा अध: पातन तथा तिर्यकपातन यंत्र द्वारा पारद को तिर्यक पातित कर लेते हैं।
- इस प्रकार का पररद नाग-तंग त्यादि अन्य धातुओं को ताम्र में छोड़ देता है और स्वयं यौगिक आदि सभी दोषो से मुक्त होकर शुद्ध रूप में प्राप्त होता है।
- त्रिविध पातन मे तिर्यक पातन का अधिक महत्व है | एक तिर्यक पातन मात्र से ही पारद का तीनो पातन हो जाता हैं।
- पारद के प्रथम पांच संस्कार से पारद सभी प्रकार से शुद्ध हो जाता हैं।

Ayurvedic Formulation

परिणाम - **" वंगनागौपरित्यप्य शुध्दोभवति सूतक: "**

" वङ्गादिसम्पर्कजकञ्चुकध्नम् "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पारद स्थित नाग-वर्ग के सम्पर्क से उत्पन्न कञ्चुक दोषों का नाश होता है।

6) बोधन संस्कार -

यंत्र - दोला यंत्र

परिभाषा -

- स्वेदन संस्कार से पातन संस्कार तक की प्रक्रियाओं के फलस्वरूप पारद मन्दवीर्य, षण्ढ एवं मरणासन्न हो जाता है। फिर से उसमें वीर्योत्कर्ष के लिए की जाने वाली प्रक्रिया को बोधन कहते है।
- लवण के घोल (जल) में तीन दिन तक रखने पर पारद का बोधन होता हैं।

परिणाम - **" वीर्यं प्राप्नोत्यनुत्तमम् "**

पारद मंदता त्यागकर वीर्यवान प्राप्त हो जाता हैं।

7) नियमन संस्कार -

यंत्र - दोला यंत्र

परिभाषा -

- बोधन / रोधन संस्कार द्वारा वीर्योत्कर्ष प्राप्त पारद के चपलत्व को नियन्त्रित करने हेतु की जाने वाली स्वेदन क्रिया को नियमन संस्कार कहते है।
- पारद + 1/16 पानपत्र , सैंधवलवण, लहसुन, इमली - कल्क बनाकर दोलायंत्र में 3दिन तक स्वेदन करना चाहिए।

परिणाम - **" चपलत्वनिवृत्तये "**

चपलत्व को नष्ट करता है

8) दीपन संस्कार -

यंत्र - दोला यंत्र

परिभाषा -

- पारद में बुभुक्षा उत्पन्न करने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया को दीपन संस्कार कहते हैं।
- पारद + 1/16 कासीस , टंकण , स्फटिक - कल्क बनाकर कांजी से स्वेदन करना चाहिए।

परिणाम - **" ग्रासार्थी, बुभुक्षा "**

पारद में ग्रास ,बुभुक्षा बढ़ती है

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 ,8962265728

संस्कार	उपयोगी यंत्र	परिणाम
1) स्वेदन	(दोलायंत्र में)	मलशैथिल्यकारिणं।
2) मर्दन	(खरल यंत्र में)	मर्दनं बर्हिमलविनाशनम्।
3) मूर्च्छन	(तप्व खरलयंत्र में)	नष्टपिष्टकारकम मूर्च्छनं, दोषत्रय / सर्वदोष विनाशनम्, रूजाहर, निर्मलत्वं।
4) उत्थापन	(कांजी में दोलायंत्र विधि द्वारा स्वेदन)	मूर्च्छाव्यापत्तिनाशनम् - मूर्च्छित पारद को स्वभाविक अवस्था में लाना
5) पातन	(पातनयंत्र में)	नागवंगदोष निवारणार्थ, यौगिक दोषहरणं, सकलदोषनिर्मुक्त।
6) बोधन या रोधन	(सृष्टयम्बुज के साथ दोलायंत्र में स्वेदन)	षण्ड पारद की षण्डत्व नष्ट करने हेतु, महामुखकर, महामुखकर, वीर्यप्रकर्षः।
7) नियमन	(दोलायंत्र में)	चपलत्वनिवृत्तये (चपलता नियन्त्रण हेतु), वीर्यवान् जयेत् वह्निमित्रत्वकारकः।
8) दीपन	(दोलायंत्र में)	दीपनं वीर्यतेजवृद्धि ग्रासार्थी, बुभुक्षा हेतु।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पारद की गतियाँ

पारद में स्वभावतः चञ्चलता रहती है

- अतः इस चञ्चलता के कारण पारद का विभिन्न क्षाराम्ल आदि औषधियों के साथ मर्दन - मूर्च्छन - स्वेदन - प्रक्षालन -गालनादि क्रियाओं को करते समय नष्ट होने का भय रहता है।
- संस्कार पूर्ण होने तक पारद अल्पमात्रा में प्राप्त होता है। इस प्रकार पारद के कम होने या नष्ट होने के मार्गों को ही पारद की गतियाँ कहा जाता है।

रसरत्नसमुच्चय में पारद की **पाँच** प्रकार की **गतियों** का उल्लेख है -

1) जलगति
2) हंसगति
3) मलगति
4) धूमगति
5) जीवगति

1) जलगति -

- पारद को मर्दन , मूर्च्छन आदि संस्कारोपरान्त उष्ण जल , के साथ प्रक्षालन किया जाता है। प्रक्षालन करते समय पारद के सूक्ष्म कण भी जल के साथ निकल जाते है।
- जिनको भ्रमवश जल मान लेने के कारण पारद के मान में कमी हो जाती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) हंसगति -

- पारद को अन्य पदार्थों के साथ मर्दन करते समय , एक पात्र से दूसरे पात्र में डालते समय शीघ्रता करने से सूक्ष्मकण उछलकर चले जाते हैं।
- हंस पक्षी के समान पारद के श्वेत शुभ्रकण उड़कर गिर जाने से पारद के भार में कमी आ जाती है।
- इस क्रिया को हंस के उछलने या उड़ने की क्रिया से साम्य होने से इसे पारद की हंसगति कहते है।

3) मलगति -

- नागवङ्गादि पारद के मलों को दूर करने के लिए पारद की पातनादि क्रियाएँ की जाती है। उस समय मलों के साथ मिलकर कुछ पारद निकल जाता है।
- मर्दनादि के पश्चात् उष्ण जल , काञ्जी आदि द्रवों द्वारा प्रक्षालन करने पर मर्दनादि के कल्क द्रव्यों में कृष्ण धूसर आदि वर्णों का मलीयांश निकलता है , उसके साथ पारद की हानि मल के साथ निकल जाने के कारण होती है। इसे ही मलगति कहते है।

4) धूमगति -

- उत्थापन , पातन , गन्धक जारणा आदि प्रक्रियाओं के समय तथा पारद की मूर्च्छना के समय गन्धकादि के साथ अग्नि तीव्र हो जाने से असावधानीवश / स्वभावतः पारद वाष्प बनकर धूमरूप में उड़ जाता है।
- पारद के वजन में कमी हो जाती है। धूम के रूप में निकलते हुए पारद की इस गति को धूमगति कहते है।

5) जीवगति -

- उपरोक्त चारों गतियाँ प्रत्यक्ष दृश्य होती है , किन्तु इन चारों गतियों के अतिरिक्त पाँचवी गति जीवगति होती है , जो अदृश्य होती है।
- इस गति को मन्त्र ध्यान आदि से ही रोका जा सकता है।
- जिस प्रकार मनुष्य के शरीर से आत्मा निकलते समय दिखाई नहीं देती है। ठीक उसी प्रकार प्रयोग के क्रम में पारद के निकलने की इस गति को न कोई देख पाता है और न ही पारद की इस गति को रोक सकता है।
- जिससे पारद की अदृश्य हानि हो जाती है। इस अदृश्य गति को जीवगति कहते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पारद बंध -

- जिन-जिन प्रक्रियाओं को करने पर पारद की चञ्चलता और दुर्ग्रहत्व (पारद को ग्रहण करने में होने वाली कठिनाई) दोष का नाश हो, उन प्रक्रियाओं को पारद का बन्धन कहते है।

बंध संख्या - 25

हिंगुलोत्थ पारद -

पातनायन्त्र में शुद्ध हिंगुल चूर्ण रखकर अच्छी प्रकार से सन्धिबंधन करके मध्यमाग्नियुक्त चूल्हे पर

⇩ 2 घण्टे तक पाक

यन्त्र के **ऊपरी पात्र को शीतल** रखे

⇩

स्वांगशीत होने पर पात्र के सन्धि बन्धन को हटाकर दोनों पात्रों को अलग-अलग किया जाता है

⇩

ऊपर के पात्र के अन्दर **कपड़ा से रगड़कर पारद को प्राप्त** करके

⇩

चतुर्गुण मोटे स्वच्छ वस्त्र से दो-तीन बार छान लिया जाता है

⇩

पारद धुआँ **जैसा ऊपर के पात्रतल में चिपकता** है यही पारद सर्वदोषरहित एवं **शुद्ध** होता है

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

जारणा

परिभाषा -

पारद में गालन, पातन आदि प्रक्रियाओं के बिना ही बालुका यन्त्र, जारणायन्त्र आदि यन्त्रों के द्वारा गन्धक, अभ्रक, माक्षिक, स्वर्ण, रत्न आदि द्रव्यों का जारण करने के पश्चात् भी पारद के भार या स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं हो, उसे जारणा कहते है।

" द्रुतग्रास क्षय एवं जारणा "

पारद मे द्रुत ग्रास का. क्षीण या जीर्ण हो जाना ही जारणा है।

जारणा के भेद -

प्रथम भेद -

1) भूचरी जारणा
2) खेचरी जारणा

द्वितीय भेद -

1) बाल जारणा
2) वृद्ध जारणा

तृतीय भेद -

1) सुमुख जारणा
2) निर्मुखजारण
3) वासनामुख जारणा

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

जारण -

- विविध यन्त्रों द्वारा पारद में गन्धक आदि द्रव्यों को जीर्ण करना (पचाना) जारण कहलाता है।
- पारद में रोगनाशक शक्ति तथा रसायन गुण उत्पन्न करने के लिए षड्गुण गन्धक का जारण अवश्य करना चाहिए।
- क्योंकि पारद अष्टसंस्कारित हो या हिंगुलोत्थ पारद हो, यदि उसमें छः गुना गन्धक का जारण न किया गया हो तो उसमें रोगनाशक शक्ति पूर्ण रूप से नहीं आती।

गन्धक जारण विधि - **दो विधि**

1) बहिर्धूम
2) अन्तर्धूम

1) बहिर्धूम -

- बालुका यन्त्र विधि से खुले मुख वाले पात्र में जो गंधक जारण किया जाता है, उसे बहिर्धूम गन्धक जारण कहते हैं। इस विधि से गन्धक की क्रिया शीघ्र सम्पन्न हो जाती है।

विधि -

बालुका यन्त्र के ऊपर एक मिट्टी या लौहे का पात्र रखकर

⇩

शुद्ध पारद एवं शुद्ध गन्धक समानभाग में डाल दें

⇩

गन्धक पिघलाकर बाद में शुद्ध पारद डालकर अग्नि देते जावें

⇩

जब आधा गन्धक जल जावेंतब पुनः उसमें पारद के समान भाग में गन्धक डाल दें

⇩

इस प्रकार क्रमशः छः गुना गन्धक का जारण कर लें

Ayurvedic Formulation

2) अन्तर्धूम -

- कच्छप यन्त्र या भूधर यन्त्र द्वारा बन्द कूपी या यन्त्र गन्धक का जारण किया जाता है। इस विधि से गन्धक जारण की क्रिया मन्द गति सम्पन्न होती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

विधि -

कच्छप यन्त्र के पात्र में

⇩

सर्वप्रथम पारद का आधा भाग गन्धक डालकर उसमें गड्ढा कर पारद डाल दें

⇩

ऊपर से शेष आधा भाग गन्धक डालकर पात्र के मुख को भली प्रकार अवरुद्ध कर अग्नि देवे

⇩

इसी क्रम से षड्गुण गन्धक का जारण कर लें

जारणाक्रम -

कच्छप यन्त्र के माध्यम से

गन्धक का - अभ्रक - स्वर्णमाक्षिक सत्त्व - हेमप्रभृति द्रव्यों का - नाग, बङ्ग एवं रत्नादि का जारण करना चाहिए।

मूर्च्छना

परिभाषा -

- पारद में गन्धक के संयोग से अथवा गन्ध के बिना ही निश्चित रूप से व्याधिनाश की शक्ति उत्पन्न करने की प्रक्रिया को मूर्च्छना कहते है।
- पारद में निश्चित व्याधिनाशक शक्ति का आधान करने को ही मूर्च्छना कहते है।

मूर्च्छना के प्रकार - 2 प्रकार

1) सगन्ध (गन्धक युक्त)
2) निर्गन्ध (गन्धक रहित)

सगन्ध मूर्च्छना - 3 भेद

1) बहिर्धूम
2) अन्तर्धूम
3) निर्धूम

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
Call - 8319811628 , 8962265728

मूर्च्छना लक्षण -

- शुद्ध गन्धक के साथ शुद्ध पारद को खल्व में अच्छी प्रकार से मर्दन करने पर पारद अपनी गुरुता एवं चपलता को त्यागकर कज्जलवत् कृष्णवर्ण, सूक्ष्म चूर्ण रूप हो जाता है। इसे ही मूर्च्छना कहते है।
- पारद जब अपनी गुरुता एवं चपलता को त्यागकर कृष्णवर्ण का चूर्ण समान हो जाये तो उसे मूर्च्छना जानना चाहिए , यह अनेक वर्ण का भी हो सकता है **जैसे -** रक्तवर्ण - रससिंदूर

मूर्च्छनाफल -

- पारद मृत होकर देहसिद्धि प्रदान करता है। मूर्च्छित होकर व्याधि का विनाश करता है।
- सगन्ध रससिन्दूरादि रूप में पारद को दीर्घकाल तक सेवन करने पर भी शरीर में पारद विकार नहीं होते है।
- निर्गन्ध रसपुष्पादि रूप पारद को रोग शान्त होने के बाद कुछ समय और सेवन करने पर भयंकर पारद विकार उत्पन्न हो जाते है।

पारद मूर्च्छित रसौषधियाँ

मूर्च्छन संस्कार एवं मूर्च्छना में भेद -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मूर्च्छन	मूर्च्छना
पारद के नैसर्गिक दोषों को दूर करने के लिए पारद का तृतीय संस्कार है।	पारद में व्याधिनाशक गुण उत्पन्न करता है। .
पारद मूर्च्छन संस्कार में प्रयुक्त औषधियों से नष्ट पिष्ट हो जाता है।	पारद सेवन करने योग्य होता है।
पारद स्थित नागवङ्गादि दोष मूर्च्छित हो जाते है।	यह कज्जली, पर्पटी, रससिंदूर, स्वर्णवङ्ग, रसकर्पूर, मुग्धरस आदि रूपों में अनेक वर्ण का हो जाता

खल्वीय कल्पना

त्रिभुवनकीर्ति रस -

घटक द्रव्य -

- शुद्ध हिंगुल
- शुद्ध टंकण
- सोंठ
- पिप्पली
- शुद्ध वत्सनाभ
- पिप्पलीमूल
- कालीमरिच

प्रत्येक द्रव्य 1-1 भाग

भावना द्रव्य - तुलसीपत्र स्वरस, आर्द्रक स्वरस, धत्तूरपत्र स्वरस प्रत्येक -की 3-3 भावना।

निर्माण विधि - सर्वप्रथम शुद्ध हिङ्गुल एवं शुद्ध टंकण को खल्व में मर्दन करके शेष द्रव्यों के सूक्ष्म चूर्ण को डालकर क्रमशः तुलसीपत्र स्वरस, आर्द्रक स्वरस एवं धत्तूरपत्र स्वरस की 3-3 भावना देकर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना, सुखाकर काँच की शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा - 1 रत्ती **उपयोग -** सर्वज्वर, 13 सन्निपात ज्वर **अनुपान -** आर्द्रक स्वरस

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पर्पटी कल्पना

व्युत्पत्ति - ' पर्पटी ' शब्द 'पर्पट' से बना है , जिसका अर्थ 'पापड' होता है।

पर्पटी का इतिहास -

- पर्पटी कल्पना का आरम्भ 8 वीं शताब्दी में माना जा सकता था।
- 11वीं शताब्दी में आचार्य चक्रपाणिदत्त द्वारा लिखित ग्रन्थ "चक्रदत्त" में ग्रहणी चिकित्सा के अन्तर्गत पर्पटी का उपयोग किया है।

परिभाषा -

- शुद्ध पारद एवं शुद्ध गन्धक को अच्छी प्रकार से। घोटकर बनायी गई कज्जली को अग्नि पर पिघलाकर केले के पत्रों के मध्य ऊर्ध्वाधः गोबर द्वारा दबाकर चिपटाकार बनाने को पर्पटी कहते है।
- जो समस्त बाल रोगों को नष्ट करती है।

पर्पटी भेद - 2

1) **सगन्ध**
2) **निर्गन्ध**

Ayurvedic Formulation

1) सगन्ध पर्पटी -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 8319811628 , 8962265728

- इसमें प्रधान द्रव्य पारद एवं गन्धक होते है।
- जैसे - स्वर्ण, ताम्र, लौह, मण्डूर, रस पर्पटी।

2) निर्गन्ध पर्पटी -

- इसमें पारद - गन्धक नहीं होता है।
- यथा:- श्वेत पर्पटी, मल्ल पर्पटी।

पर्पटी निर्माण विधि -

सर्वप्रथम शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक की कज्जली बनाते है

⇩

फिर भूमि पर ताजा गोबर बिछाकर उसके ऊपर केले का पत्ता बिछा देते है

⇩

एक दूसरे केले के पत्ते को भी डंठल निकालकर उसमें गोबर भरकर पोट्टली बनाकर रख लेते है

⇩

अब कज्जली को लौहदव में थोड़ा घी डालकर अग्नि पर पंकवत द्रवित कर लेते है। गर्म करते हुए चम्मच से हिलाते रहे ताकि कज्जली किनारे पर नहीं लगे

⇩

कज्जली के पूर्णरूप से द्रवित होते ही गोबर पर रखे केले के पत्ते पर फैलाकर शीघ्र ही दूसरे केले के पत्ते की पोट्टली से दबा देते है

⇩

इस प्रकार दबाने पर गोबर की शीतलता से ठंडी होकर चपटे स्वरूप की पपड़ी बन जाती है

Ayurvedic Formulation

सावधानी -

- ✓ लौहदर्वी में कज्जली पिघलाने में घृत को अल्प मात्रा में प्रयुक्त करना चाहिए।
- ✓ पर्पटी बनाने में ताजा कदलीपत्र के बीच का डंठल निकाल कर बिना फटा हुआ प्रयुक्त करना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पर्पटी उपयोग -

- ❖ रस-रसायन कल्पनाओं में पर्पटी कल्प अतिमहत्त्वपूर्ण औषधि है।
- ❖ पर्पटी मुख्यतः मन्दाग्नि एवं दुर्बल पित्तजन्य संग्रहणी की विशेष औषधि है।
- ❖ आन्त्रविकारों में विशेष रूप से पारद गन्धक युक्त पर्पटी उपयोगी है।
- ❖ पर्पटी का विशेष प्रभाव ग्रहणी रोग पर होता है।
- ❖ पारद पर्पटी का मुख्य घटक होने के कारण सभी पर्पटियाँ जन्तुघ्न, पाचक, व्रणशोधक, व्रणरोपक, शक्तिवर्द्धक होती है। ताम्र पर्पटी कुष्ठ, यकृत्प्लीहा विकार पर भी गुणकारी होती है ।

पर्पटी पाक परीक्षा - 3

1) मृदुपाक
2) मध्यमपाक
3) खरपाक

- औषधि के रूप में मृदु एवं मध्यमपाक का ही प्रयोग किया जाता है।
- खरपाकयुक्त पर्पटी को विष की तरह त्यागने का निर्देश है।

पर्पटी पाक	पाक कालीन परीक्षा	पर्पटी पाक तापमान	पाक पश्चात् परीक्षा
मृदुपाक	मयूरचन्द्रिका वर्ण	250°C	सम्यक रुप से न टूटना
मध्यमपाक	तैलाभ वर्ण	500°C	टूटने पर रजत समान
खरपाक	रक्तवर्ण	650°C	लोहित वर्ण

रस पर्पटी

घटक द्रव्य - हिंगुलोत्थ पारद + शुद्ध गन्धक दोनों समान भाग

सहायक द्रव्य - गोघृत

उपकरण - लौहे का चूल्हा, चम्मच छोटी, चाकू, कलछुल, खल्व, गोमय, कदलीपत्र, गोघृत, बेर की लकड़ी का कोयला

निर्माण विधि -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

हिंगुलोत्थ पारद + **अग्निमन्थ स्वरस,** एरण्डमूल स्वरस एवं आर्द्रक स्वरस के साथ **1-1 दिन मर्दन** करके जल से **प्रक्षालित** कर साफ करें

⇩

शुद्ध गन्धक को भृंगराज स्वरस की **सात भावना** सुखा लें

⇩

तत्पश्चात् **शुद्ध गन्धक** को बेर के कोयलों की **अग्नि में पिघलाकर तीन बार** भृंगराज स्वरस में **बुझालें**

⇩

अब **पारद एवं गन्धक** को एक साथ खल्व में डालकर **2-3 दिन मर्दन कर कज्जली** बनाए

⇩

कज्जली को **अल्प घृत लिप्त** लौहदरवी में डालकर कोयले के अङ्गार पर **गर्म करके पंकवत् द्रवित** करें

⇩

द्रवित होने पर गोमय स्थित कदली पत्र पर डालकर **गोमययुक्त कदली पत्र की पोट्टली से दबाकर पर्पटाकार** बनावें

⇩

निर्मित पर्पटी को **चाकू से खुरचकर पर्पटी** को निकाल लें

पर्पटी मात्रा - सामान्य रूप से 2 रत्ती

अनुपान - तक्र, दुग्ध या आम्ररस

उपयोग - ग्रहणी, क्षय, कास, जलोदर, गुल्महर, अतिसार

ताम्र पर्पटी

Ayurvedic Formulation

घटकद्रव्य -

1) ताम्र भस्म – 3 भाग
2) शुद्ध पारद - 3 भाग
3) शुद्ध गन्धक - 3 भाग
4) शुद्ध वत्सनाभ - 1 भाग

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निर्माण विधि -

शुद्ध पारद एवं शुद्ध गन्धक को खल्व में **मर्दन** करके **कज्जली** बनाकर उसमे **ताम्र भस्म डालकर** अच्छी प्रकार से घोटकर **मिलावें**

⇩

⇩

तत्पश्चात् **शुद्ध वत्सनाभ का चूर्ण** डालकर भलीभाँति मिलावे

⇩

सम्यक् रूप से सभी द्रव्य एकाकार हो जाने पर **कज्जली के मिश्रण को घृत लिप्त** लौह **दर्वी में** डालकर **अग्नि** पर पिघलाये

⇩

गोमयस्थित अर्कपत्र पर डालकर दूसरे **अर्कपत्र की गोमययुक्त पोट्टली से दबाकर पर्पटी बनावें** यह ताम्र पर्पटी है।

मात्रा - 2 से 3 रत्ती

अनुपान - पिप्पली चूर्ण, मधु एवं एक निष्क बाकुची चूर्ण।

- **सन्निपातज्वर** में आर्द्रक स्वरस से,
- **पाण्डु** में त्रिफला क्वाथ से,
- **ग्रहणी** भुना जीरा 4 रत्ती
- **प्रमेह** त्रिफला चूर्ण एवं मधु से,

उपयोग - श्वास, कास, ज्वर, संग्रहणी, यकृत्प्लीहावृद्धि, आदि।

Ayurvedic Formulation

पर्पटी	घटक एंव अनुपात	रोगाधिकार
1) रस पर्पटी	हिंगुलोत्थ पारद एवं गंधक (1:1)	संग्रहणी (भै.र.)
2) लौह पर्पटी	हिंगुलोत्थ पारद, गंधक एवं कान्तलौह (1:1:1)	संग्रहणी (भै.र.)
3) स्वर्ण पर्पटी	हिंगुलोत्थ पारद, गंधक एवं स्वर्णभस्म (1 : 1:1/4)	संग्रहणी (भै.र.)
4) पंचामृत पर्पटी	गन्धक, पारद, कान्तलौह, अभ्रकभरम, ताम्रभस्म (8:4:2:1:1/2)	संग्रहणी (भै.र.)
5) ताम्र पर्पटी	पारद, गन्धक, ताम्रभस्म एवं वत्सनाभ (3:3:3:1)	कुष्ठ(र.र. समु) कास (यो.र.)
6) श्वेत पर्पटी	सूर्यक्षार, स्फटिका एवं नवसादर (1:1/8 : 1/16)	मूत्रकच्छ्र

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कूपीपक्व कल्पना

परिभाषा -

" कुप्याम् अग्निनां पक्वं यदौषधम् तत् कूपीपक्वकल्पम् । "

काँच की कूपी (शीशी) में पारद आदि द्रव्यों को डालकर अग्नि द्वारा पकाकर जो औषध निर्माण की जाती है उसे कूपीपक्व कल्पना कहते है।

कूपीपक्व रस भेद - 2

1) **सगन्ध -** रससिन्दूर, ताम्रसिन्दूर, मल्लसिन्दूर
2) **निर्गन्ध -** रसपुष्प, रसकर्पूर

प्राप्तिस्थान के आधार में - 3

1) **कण्ठस्थ** - रससिन्दूर, रसकर्पूर, मल्लसिन्दूर
2) **तलस्थ** - रससिन्दूर, समीरपन्नग रस
3) **उभयस्थ** - पूर्णचन्द्रोदय, माणिक्य रस

Ayurvedic Formulation

यन्त्रोपकरण - साधन सामग्री

1) **काँच कूपी -** beer bottle
2) **बालुका**
3) **बालुका यन्त्र**
4) **वस्त्र**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

5) **मुलतानी मिट्टी -** सात बार कपड़मिट्टी करने हेतु
6) **लौहशलाका -** 4 फिट लम्बी लौह शलाका
7) **अग्निभट्टी -**

- मृदु अग्नि - (200 -250°c)
- मध्य अग्नि - (250 - 400°c)
- तीव्र अग्नि - (400 - 600°c)

8) **कूपी स्टेण्ड**

9) **मुद्रा -** जिससे मुख बन्द किया जाता है, उसे मुद्रा कहते हैं।

10) **कूपीमुख मुद्रण -** कूपी के मुख पर डाँट लगाकर बन्द करना कूपीमुख मुद्रःकहलाता है।

मुख मुद्रण से पूर्व निम्नांकित **बातों का ध्यान रखना** चाहिए -

1) कूपी से लपटों का निकलना बन्द हो गया हो।
2) कूपी के चारों तरफ अँधेरा कर कूपी के तल को देखने पर तली रक्तवर्ण की प्रतीत हो।
3) कूपी में शीत शलाका डालने पर शलाका में धुएँ का न लगना।
4) कूपी मुख पर ताम्र का सिक्का रखने से उस पर पारद कण के चिपककर सिक्के के उस भाग को श्वेत कर देते हैं।
5) कूपी की तली के अन्दर सूर्योदय जैसा गोल रक्त बिम्ब की तरह प्रतीत होना।

रससिन्दूर (Red sulphide of mercury)

घटक द्रव्य -

1) शुद्ध पारद- 1 पल
2) शुद्ध गन्धक - 1 पल

भावना द्रव्य - वटांकुर स्वरस तीन भावना

निर्माण विधि -

शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक (2 - 2 पल) लेकर खल्व में एकत्र मिलाकर **2 दिन मर्दन करके कज्जली निर्माण**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

⇩

कज्जली में **वटांकुर स्वरस 3 भावना** देकर सुखा देते हैं

⇩

कूपी में मुलतानी मिट्टी से **7 बार कपड़ मिट्टी** करके सुखायें

⇩

कूपी में कज्जली को भरकर बालुका यन्त्र में रखकर मन्द, मध्य और तीव्र **अग्नि** क्रमशः देवें

⇩

प्रथम **दो याम** (6 घंटे) तक **मृदु अग्नि** देकर मध्यम अग्नि देवें

⇩

गन्धक जीर्ण हो जाने पर काँच कूपी के **मुख पर डाँट** लगाकर **गुड़ और चूने के मिश्रण से भली-भाँति बन्द** करें

⇩

फिर **6 घण्टे तक तीव्र अग्नि** देकर पाक करें , बालुका यन्त्र के **स्वांगशीत** हो जाने पर काँच कूपी को बालुका यन्त्र से **बाहर निकालकर तोडे**

⇩

उसमें से **रक्तकमल सदृश वर्ण** वाला कूपी के **कण्ठ में लगा हुआ रस सिन्दूर प्राप्त** करना चाहिए

रससिन्दूर प्राप्तिमान - यदि 100 ग्राम पारद और 100 ग्राम गन्धक लिया जाय तो 116 ग्राम कुल रससिन्दूर बनना चाहिए

मात्रा - 1 से 2 रत्ती प्रातः सायं

अनुपान - शहद, मक्खन

उपयोग - रसायन, वाजीकरण, स्नायुदौर्बल्य नाशक, ज्वर, प्रमेह, पाण्डु।

Ayurvedic Formulation

1) रससिन्दूर (Hgo) -

- **घटक एवं अनुपात -** पारद, गन्धक (6 : 1)
- **भावना -** कज्जली में वंटाकुर स्वरस की 3 भावनाएँ
- **मात्रा -** 1-2 स्ती तक

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) रसकर्पूर (Hg2S04) -

- **घटक एवं अनुपात -** पारद + सैंधव + गन्धकाम्ल (1 : 1:½)
- **मात्रा -** 1 / 64 - 1 / 32 रती
- **उपयोग -** कृमि, विषनाशक, फिरंग रोगनाशक

3) मकरध्वज -

- **घटक एवं अनुपात -** स्वर्ण + पारद + गन्धक। (1: 8:16)
- **रसेन्द्र सार संग्रह में उपयोग** - रसायन व बाजीकरण

4) समीरपन्नग रस -

- **घटक एवं अनुपात -** पारद, गंधक, मन: शिला ,संखिया,हरताल
- **भावना -** तुलसी पत्र स्वरस की भावना - 3 बार
- **उपयोग -** वातव्याधि , उन्माद , आमवात

पोट्टली कल्पना

विस्तृत वस्तु की अल्प विस्तार में गोली बनाकर औषध निर्माण करने को पोट्टली कल्पना कहते है।

इतिहास - पोट्टली कल्पना का 12 वीं शताब्दी में रसरत्नाकर ग्रन्थ में आचार्य नित्यनाथ ने सर्वप्रथम वर्णन किया है।

Ayurvedic Formulation

हेमगर्भ पोट्टली

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

घटक द्रव्य -

1) शुद्ध पारद- 4 भाग
2) शुद्ध गन्धक- 2 भाग।
3) स्वर्ण भस्म - 1 भाग।
4) ताम्र भस्म - 3 भाग

भावना द्रव्य - कुमारी स्वरस + निर्गुण्डी स्वरस

निर्माण विधि -

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, स्वर्ण भस्म एवं ताम्र भस्म को खल्व में डालकर **कुमारी स्वरस** आदि से **7 दिन तक मर्दन** करके **कज्जली निर्माण**

⇩

फिर **घृतकुमारी** आदि के स्वरस से **बड़ी सुपारी** जैसी शंक्वाकार **गुटिका** बनाकर सुखा लेते है

⇩

अब **एक फीट** (12 इंच) गाढे **रेशमी वस्त्र में 1 तोला** शुद्ध **गन्धक चूर्ण** रखकर उस पर **गुटिका को रखकर** पुनः ऊपर से शुद्ध **गन्धक चूर्ण 2 तोला** डालकर गुटिका को ढक दिया जाता है और **रेशमी वस्त्र को कसकर बांधते** है

⇩

मूषा या प्यालीनुमा किसी मिट्टी के पात्र में **250 ग्राम शुद्ध गन्धक** डालकर **मृदु अग्नि पर पिघलावें**

⇩

जब गन्धक पिघल जाय तो शंक्वाकार **गुटिका की पोट्टली को** दोला यन्त्र की तरह लटकाकर **अग्नि पर पाक** करें और बीच-बीच में पोट्टली को बाहर निकालकर कलछुल आदि पर हल्का ठोकते रहे

⇩

Ayurvedic Formulation

जब उस पोट्टली से धातुकीय शब्द **टन्- टन् की आवाज आने लगे** एवं गन्धक का वर्ण **व्योम वर्ण** हो जाये तो पोट्टली को बाहर निकाल लेना चाहिए

⇩

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 ,8962265728

फिर **शीत** हो जाने पर पोट्टली खोलकर **गुटिका को बाहर निकालकर** उस पर चिपके हुए **गन्धक को हटाकर** शंक्वाकार गोली **(पोट्टली) को सुरक्षित** रखे

तापमान - पोट्टली निर्माण में 120°C अग्नि से ज्यादा नहीं देना चाहिए

प्रमुख उपयोग - हेमगर्भ पोट्टली को सन्निपात व्याधियों में आर्द्रक स्वरस में घिसकर प्रयोग करें

रस सेवन विधि -

रसभस्म का शरीर में प्रयोग करने से पूर्ण शरीर को पञ्चकर्म द्वारा शुद्ध करके सम्यक् बल-वीर्य प्राप्ति हेतु कोई एक रसायन योग का एक पक्ष या एक मास या एक वर्ष तक प्रयोग करें। तत्पश्चात् रसभस्म को ताम्बूल (पान) में रखकर विधिपूर्वक सेवन करें।

रस सेवन में पथ्य -

शुद्ध घी, सैंधवलवण, धनियाँ, जीरक, आर्द्रकादि पदार्थों से संस्कारित चौलाई, धनियाँ, परवल, लौकी, नेनुआ आदि, गेंहूँ, पुराना शालिचावल, गोदुग्ध, दही, घृत, हंसोदक, मुद्गयूष को पारद सेवन काल में पथ्य माना गया है।

रस सेवन में अपथ्य -

बड़ी कटेरी, बिल्व, पेठा, वेतांकुर, करेला, उड़द, मसूर, मटर, कुलत्थ, सरसों एवं तिल के पदार्थ, लंघन, उबटन, स्नान, मुर्गे का मांस, आनूप मांस, मद्य, आसव, काञ्जी, कदली पत्र, कांस्यपात्र में रखा भोजन, गुरु, विष्टम्भी भोजन, तीक्ष्ण एवं उष्ण पदार्थों को पारद सेवन काल में अपथ्य माना गया है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

महारस

" अभ्रवैक्रान्तमाक्षिकविमलाद्रिजसस्यकम् । चपलो रसकश्चेति ज्ञात्वाऽष्टौ सङ्ग्रहेद्रसान् ।। "

अभ्रक (Mica)

पर्याय - गौरीतेज ,ख ,व्योम गगन, वज्र,बहुपत्र

इतिहास -

- छठी शताब्दी के अमरकोष में अभ्रक को **" गिरिजामल "** कहा गया है।
- रसशास्त्र में पारद को **शिवबीज** एवं अभ्रक को **गौरीतेज** कहा गया है।
- अभ्रक का उपयोग रसशास्त्र में पारद को शक्ति सम्पन्न बनाने हुआ है।

अभ्रक के भेद - **4 प्रकार**

वर्णभेद से - 16 (श्वेत, पीत, रक्त, एवं कृष्ण)

1) **पिनाक**
2) **नाग**
3) **मण्डूक**
4) **वज्राभक**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) पिनाक अभ्रक -

- इसे अग्नि में तप्त करने पर इसके सूक्ष्म पत्र आसानी से अलग-अलग हो जाते है।
- इस अभ्रक के सेवन करने पर मलावरोध होकर मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

2) नाग अभ्रक -

- इसे अग्नि में तपाने पर सर्प की तरह फुत्कार शब्द उत्पन्न होता है।
- इस अभ्रक के सेवन करने पर मण्डलादि कुष्ठ रोग उत्पन्न हो जाते है।

3) मण्डूक अभ्रक -

- इसे अग्नि में तपाने पर मेंढ़क की तरह अग्नि से चटखकर एवं उछलकर बाहर आ जाता है।
- इस अभ्रक के सेवन करने पर अश्मरी रोग उत्पन्न करता है, जो शल्य क्रिया साध्य होता है।

4) वज्र अभ्रक -

- अग्नि पर तपाने पर यह अभ्रक सभी विकृतियों से रहित निश्चल बना रहता है।
- इस अभ्रक के सेवन करने पर देहसिद्धि एवं लौहसिद्धि प्राप्त होती है।
- यह **सम्पूर्ण रोगनाशक और सर्वश्रेष्ठ** यही होता है।

- **कृष्णवजाभ्रक Biotite - (श्रेष्ठ)**
- **श्वेत अभ्रक (Muscovite)**
- **रक्त अभ्रक Phlogopite**
- **पीत अभ्रक - Lepidolite**

ग्राह्य अभ्रक लक्षण -

" स्निग्धं पृथुदलं वर्णसंयुक्त भारतोऽधिकम् "

- चिकना
- मोटे दल वाला
- उत्तम वर्ण से युक्त
- भारयुक्त
- आसानी से पत्र पृथक हो जाए

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अभ्रक शोधन -

निर्वाप (7 times) - अभ्रक को अग्नि में प्रतप्त करके काञ्जी, गोमूत्र, त्रिफला क्वाथ, गोदुग्ध एवं बदरीपत्र या छाल का क्वाथ- इनमें से किसी भी एक द्रव्य में सात बार बुझाने से अभ्रक शुद्ध हो जाता है ।

अभ्रक मारण -

- धान्याभ्रक को कासमर्द के स्वरस, से मर्दन कर चक्रिका बनायें। फिर सुखाकर शराव सम्पुट में बन्दकर 10 गजपुट की अग्नि में पाक करने से अभ्रक भस्म हो जाती है।
- नागरमोथा या चौलाई के स्वरस से मर्दन कर सुखाकर 10 पुट देने से अभ्रक की भस्म हो जाती हैं।

धान्य अभ्रक निर्माण -

- **शुद्ध अभ्रक चूर्ण एवं 1/4 भाग शालिधान्य** ⟶ कांजी में तीन रात्रि तक डुबोकर फिर कांजी में रखकर मर्दन कर प्राप्त अभ्रक 'धान्याभ्रक' कहलाता है।

अभ्रक सत्व - Fe

अभ्रक भस्म की मात्रा - 1-2 रती।

भस्म वर्ण - सुंदराभ, ईष्टिका चूर्ण सम।

प्रमुख योग -

1) आरोग्यवर्धनीवटी
2) अग्निकुमाररस
3) विजयपर्पटी
4) पंचामृत पर्पटी

Ayurvedic Formulation

वैक्रान्त (Tourmaline)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पर्याय - विक्रान्त, जीर्ण वज्रक , कुवज्रक , चूर्णवज्र

वैक्रान्त स्वरूप -

- 8 धार, 8 फलक, 6 कोण
- अतिस्निग्ध
- गुरू
- मिश्रित वर्णों से युक्त

वैक्रान्त के भेद -

8 (र. रसमु.) - श्वेत, पीत, रक्त, नील, धूमवर्ण / पारावत वर्ण, श्याम, कृष्ण, कर्बुर

7 (रसार्णव) - श्वेत, पीत, रक्त, नील, पारावत वर्ण, श्याम, कृष्ण

- कृष्ण वर्ण वाला वैक्रान्त - **देहसिद्धिकर**
- नील वर्ण तथा पारावत वर्ण वाला वैक्रान्त **त्याज्य**
- लालवर्ण तथा मरकत मणि के समान **सम्पूर्ण सिद्धि हेतु**

वैक्रान्त का शोधन -

1) **स्वेदन -** त्रय क्षार (यवक्षार, सज्जीक्षार, टंकण), पञ्चलवण, अम्लद्रवों, मूत्रों, कुलत्थ क्वाथ, केले की जड़ का स्वरस, कोदो का क्वाथ- इस सभी को मिलाकर दोला यन्त्र विधि **से तीन दिन तक** स्वेदन करने से या केवल कुलत्थ क्वाथ में ही तीन दिन तक स्वेदन करने से वैक्रान्त शुद्ध हो जाता है।

2) **निर्वाप - (21times)** वैक्रान्त को प्रतप्त करके 21 बार अश्वमूत्र में बुझाने से वैक्रान्त शुद्ध हो जाता।

वैक्रान्त मारण -

- शुद्ध वैक्रान्त व शुद्ध गन्धक दोनों को समान मात्रा में खल्व यन्त्र में डालकर नींबू स्वरस की भावना से घोटकर **आठ गजपुट** देने पर **रक्ताभ भस्म** हो जाती है।

वैक्रान्त की मात्रा - 1 / 24 रत्ती - 1/11 रती

वैक्रान्त भस्म वर्ण - रक्ताभ वर्ण

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 8319811628 , 8962265728

प्रमुख योग -

1) वैक्रान्त के प्रमुख योग
2) रत्नगिरी रस
3) सूचिकाभरण रस
4) नवरत्नराजमृगाङ्क रस

माक्षिक (Pyrite)

पर्याय -

- **सुवर्णमाक्षिक(Copper pyrite) -** हेममाक्षिक, माक्षीक , ताप्य, धातुमाक्षिक , **ताम्र गंधअयश्य**
- **रजतमाक्षिक** - रौप्यमाक्षिक, तारज, तारमाक्षिक , **गंधअयश्य**

माक्षिक भेद - 2

1) **स्वर्णमाक्षिक-**(Copper pyrite or chelcopyrite) **(Cu2S, Fe2S3)**
2) **रौप्यमाक्षिक**- (Iron pyrite) **(Fe2S3)**

माक्षिक शोधन -

1) **स्वेदन - (6 hr)** एरण्ड तैल एवं मातुलुङ्ग नींबू स्वरस या कदली कन्द स्वरस में दोला यन्त्र विधि से 6 घण्टे स्वेदन करने से माक्षिक शुद्ध हो जाता है।

2) **निर्वाप - (7times)** प्रतप्त माक्षिक चूर्ण को सात बार त्रिफला क्वाथ में बुझाने पर भी माक्षिक शुद्ध हो जाता है।

3) **भर्जन -** 3 भाग माक्षिक चूर्ण एवं 1भाग सैंधवलवण को लौहपात्र में डालकर थोड़े-थोड़े मातुलुङ्ग या जम्बीरी नींबू स्वरस डालकर तब तक भर्जन करना चाहिए, जब तक कि लौहे की कडाही का पेंदा **ताम्र के सदृश** रक्तवर्ण का न हो जाय। इस प्रकार करने से माक्षिक शुद्ध हो जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

माक्षिक मारण -

1) **मातुलुङ्ग नींबू स्वरस - 5 वराहपुट** माक्षिक में समान मात्रा में गन्धक मिलाकर मातुलुङ्ग नींबू स्वरस की भावना देकर पिष्टी बनाकर सुखायें , फिर इसे मूषा में रखकर पाँच बार वराहपुट में पकाने पर माक्षिक भस्म तैयार हो जाती है।

2) **गन्धक + नींबूस्वरस - 5 पुट** माक्षिक में समान मात्रा में गन्धक मिलाकर नींबूस्वरस से मर्दन कर टिकिया बनाकर सुखायें। इसके पश्चात् शराव सम्पुट में बन्द कर पुट देवें। इस प्रकार 5 पुट देने पर माक्षिक की भस्म बन जाती है।

माक्षिक की मात्रा - 1/2 - 2 रत्ती

माक्षिक भस्म वर्ण - सुन्दराभ, स्वर्णगैरिक , **रक्तोत्पल सदृशभस्म**

प्रमुख योग -

1) चन्द्रप्रभावटी
2) पंचामृतपर्पटी
3) ग्रहणीकपाट रस

विमल (Iron Pyrite) Fe2 S3

विमल के भेद - 3

1) हेम विमल
2) रौप्य विमल
3) कांस्य विमल

ग्राह्य विमल -

- विमल स्निग्ध, कोण तथा फलकयुक्त श्रेष्ठ होता है।
- यह वातपित्तनाशक, वृष्य एवं रसायन में श्रेष्ठ होता है।

विमल शोधन -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

स्वेदन - विमल के छोटे-छोटे टुकड़े करके वासा स्वरस या क्वाथ, जम्बीरी नींबू स्वरस, मेषश्रृंगी स्वरस में से किसी भी एक द्रव में दोला यन्त्र विधि से स्वेदन करने पर विमल शुद्ध हो जाता है।

विमल मारण -

गन्धक + लकुच स्वरस - 10 गजपुट शुद्ध विमल के वस्त्रपूत चूर्ण में समानमात्रा में शुद्ध गन्धक मिलाकर बड़हल (लकुच फल) के स्वरस की भावना देकर चक्रिका बनाकर सुखायें। फिर शराव सम्पुट में बन्द करके 10 गजपुट में पाक करने से विमल की भस्म बन जाती है।

विमल भस्म वर्ण - रक्तवर्ण

मात्रा - 1/2 - 2 रत्ती तक

विमल सत्व - Fe

प्रमुख योग -

1) क्षयकेसरी रस
2) रसेन्द्रचूडामणि रस
3) नवरत्नराजमृड्गांक रस

शिलाजतु (Black Bitumen or Mineral pitch)

पर्याय - शिलाजतु, शैलेय, अश्मज, अश्मजतुक, गिरिज, अद्रिज, अश्मोत्थ

शिलाजतु भेद -

आचार्य चरक - स्वर्ण , रजत , ताम्र , लोह

आचार्य सुश्रुत - स्वर्ण , रजत , ताम्र , लोह, नाग , वंग

ग्राह्य शिलाजतु -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- गुग्गलु सदृश
- सूर्यतापी
- गोमूत्र गंधी
- कृष्ण वर्ण

शिलाजतु शोधन -

1) क्षार, अम्ल लेने से शिलाजतु शुद्ध हो जाता है।
2) गोदुग्ध, त्रिफला क्वाथ या भृंगराज स्वरस में शिलाजतु को लौह पात्र में घोलकर धूप में सुखाने से शुद्ध हो जाता है।
3) क्षार, अम्ल और गुग्गुलु के साथ शिलाजतु को स्वेदनी यन्त्र में रखकर एक प्रहर स्वेदन करने से शुद्ध हो जाता है।

शिलाजतु मारण -

- शुद्ध शिलाजतु को शुद्ध मनः शिला, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरताल के साथ समान भाग में खल्व यन्त्र में डालकर मातुलुङ्ग नींबू स्वरस की भावना **देकर आठ उपलों** का पुट देने पर भस्म बन जाती है।

शिलाजतु की मात्रा - 2 रत्ती - 8 रत्ती

आचार्य चरक ने शिलाजतु की - 3 मात्रा

1) **1 कर्ष**
2) **½ पल**
3) **1 पल**

प्रमुख योग -

1) आरोग्यवर्धिनी वटी
2) चन्द्रप्रभा वटी
3) शिलाजत्वादि वटी
4) शिलाजत्वादि लौह

सस्यक (Copper Sulphate) { CuSO4 7H2O }

Ayurvedic Formulation

पर्याय - तुत्थ, तुत्थक , मयूरक, ताम्रगर्भ, अमृतासङ्ग

भेद -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) स्वभावज
2) कृत्रिम

ग्राह्य तुत्थ -

- मयूरकण्ठ सदृश विभिन्न रंगों के मिश्रण युक्त,
- बहुत भारी, स्निग्ध, अत्यन्त चमकीला तुत्थ औषध कार्य के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

तुत्थ शोधन विधि -

1) **भावना -** तुत्थ को नींबू स्वरस की तीन भावना देने पर शुद्ध हो जाता है।

2) **स्वेदन - 3 प्रहर** तुत्थ को गाय, भैंस या बकरी के मूत्र में दोला यन्त्र विधि से तीन प्रहर तक स्वेदन करने पर शुद्ध हो जाता है।

तुत्थ मारण -

- शुद्ध तुत्थ, शुद्ध गन्धक तथा शुद्ध टंकण- तीनों को समान मात्रा में लेकर बड़हल स्वरस से मर्दनकर मूषा में बन्द करके **तीन कुक्कुट पुट** में पाक करने पर तुत्थ की भस्म बन जाती है

तुत्थ सत्वपातन - Cu

तुत्थ भस्म की मात्रा - 1/8 - 1/4 रत्ती

प्रमुख योग -

1) जात्यादि घृत
2) कनकसुन्दर रस
3) जात्यादि तैल
4) महाज्वराङ्कुश रस

Ayurvedic Formulation

चपल (Bismuth ore)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

चपल के भेद -

1) **गौर**
2) **श्वेत**
3) **अरुण**
4) **कृष्ण**

ग्राह्य चपल -

- चपल स्फटिक की आभावाला
- षट्कोणयुक्त, चिकना और भारी

चपल का शोधन - चपल का चूर्ण करके जम्बीरी नींबू, बन्ध्याककोटकी तथा आर्द्रक स्वरस की सात-सात भावना देने से चपल शुद्ध हो जाता है।

चपल का मारण - शुद्ध चपल में समान भाग गिरिसिन्दूर या गन्धक डालकर निर्गुण्डी स्वरस की भावना देकर बालुका यन्त्र विधि से पाक करने पर **सुन्दर रक्तवर्ण** की भस्म बन जाती है।

रसक / खर्पर (Zinc ore or Calamine) { Zn Co3 }

पर्याय - खर्पर, खर्परसत्व, यशद, तामरन्जक, नेत्ररोगारि,

रसक के भेद - र. र. समु. - 2

1) **दर्दुर**
2) **कारवेल्लक**

रसक शोधन -

भावना - रसक को प्रतप्त करके बिजौरा नींबू स्वरस की 7 बार भावना देने पर शद्ध हो जाता है।

निर्वाप (7times) - नरमूत्र, अश्वमूत्र, तक्र अथवा काञ्जी- इनमें से किसी भी एक में रसक को प्रतप्त करके 7 बार बुझा लेने पर शुद्ध हो जाता है।

रसक मारण -

- शुद्ध पारद और शुद्ध रसक समभाग में लेकर अच्छी तरह मर्दन करके बालुका यन्त्र विधि से एक दिन पाक करने पर **रक्तवर्ण की** भस्म बन जाती है।
- शुद्ध खर्पर (रसक) को अच्छी तरह चूर्ण करके बालुका यन्त्र या लवण यन्त्र द्वारा पाक करने पर भस्म हो जाती है।

खर्पर सत्व - वंगाभ

रसक के योग -

1) लक्ष्मीविलास रस
2) बसन्तमालती रस
3) महाज्वराङ्कुश रस

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

उपरस

संदर्भ ग्रंथ - र. र. स. 3.1

" गन्धाश्मगैरिकासीसकाङ्क्षीतालशिलाञ्जनम् । ककुष्ठं चेत्युपरसाश्चाष्टौ पारदकर्मणि ।। "

गन्धक (Sulphur)

पर्याय - गन्धपाषाण, पूतिगन्ध, बलि, बलिवसा, शुल्वारि, गौरीपुष्प, पामारि, कुष्ठारि

उत्पत्ति - पार्वती के रज से (गौरी पुष्प)

भेद - र.र.समु , रसार्णव - 3

- शुकचन्चुनिभ - रक्तवर्ण
- पीतवर्ण
- श्वेतवर्ण

रसेन्द्र चूड़ामणि - 4

- **रक्तवर्ण - शुकतुण्डनिभम्**
- **पीतवर्ण - शुकपिच्छनिभम**
- श्वेतवर्ण - खटिकाकार
- कृष्णवर्ण - दुर्लभ

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

गन्धक का ग्राह्य स्वरूप -

- शुकपिच्छ के सदृश वर्ण
- नवनीत के सदृश चिकना
- मसृण, कठिन, स्निग्ध गन्धक श्रेष्ठ होता है

गन्धक शोधन -

एक मिट्टी या **स्टील के पात्र में दूध** भरकर उसके मुख को पतले **सूती वस्त्र** से बांध देवें

⇩

अब एक लौहे की कड़ाही में **गोघृत** के **साथ गन्धक** को **पिघला** लें

⇩

इस पिघले हुए गन्धक को **कपडे से छानने** पर **दूध से भरे पात्र में गिर** जाता है

⇩

फिर गन्धक को **बाहर** निकालकर **गर्म पानी से धो** लिया जाता है

⇩

यही प्रक्रिया **तीन से सात बार** करने पर गन्धक शुद्ध हो जाता है

⇩

इस प्रकार शुद्ध किया हुआ गन्धक पाषाणादि **नहीं पिघलने** वाले पदार्थो से कपड़े पर **छनकर मुक्त** हो जाता है

⇩

घृत में तुषाकार नुकीले दाने के रूप में एवं **विष** कपड़े से छनकर **नीचे जाकर पिण्ड रूप** में दूध के ऊपर **तैरता** रहता है

⇩

गन्धक को पिघलाकर **भृंगराज स्वरस** में डालकर तत्पश्चात् उसी स्वरस में **सात बार स्वेदन** करने पर हो जाता है

गन्धक शुद्ध

Ayurvedic Formulation

शुद्ध गन्धक की मात्रा - 1 - 8 रत्ती

गन्धक रसायन मात्रा - 1/½ तोला **(गन्धक रसायन में गंधक/ शर्करा 1:1)**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

प्रमुख योग -

1) गन्धरसायन,
2) पंचामृतपर्पटी,
3) कनकसुन्दर रस,
4) रससिन्दूर,
5) ग्रहणीकपाट रस,
6) समीरपन्नग,
7) मकरध्वज

गंधक का गंधनाशन - **सुर्वचला स्वरस** से हो जाता है।

गंधक द्रुति में -

- **तिलतैल : गंधक का अनुपात 16 : 1**
- पारद सहित ताम्बूल में सेवन करते है

गैरिक (Ochre or Haematite) { (Fe2 O3) Red oxide of Iron }

पर्याय - गैरेय, गिरिमृद, गिरिमृत्तिका, रक्तधातु, लोहधातु

भेद - **र.र. समु. - 2**

1) स्वर्णगैरिक
2) पाषाण गैरिकं

ग्राह्यस्वरुप -

- स्वर्ण गैरिक स्निग्ध, अत्यन्त मृदु
- पाषाण गैरिक रूक्ष, कठिन एवं साधारण रक्तवर्ण होता है।
- औषध कार्य के लिए स्वर्ण गरिक श्रेष्ठ होता है।

गैरिक का शोधन -

1) **भावना -** गैरिक में गोदुग्ध की भावना देने पर शुद्ध हो जाता है।
2) **भर्जन -** गैरिक को गोघृत में भर्जन करने पर शुद्ध हो जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मात्रा - 2 - 4 रती

प्रमुख योग -

1) पुष्पानुग चूर्ण
2) ज्वरांकुशरस
3) लघुशूतशेखररस
4) क्रमिघातिनी गुटिका

कासीस (Ferrous Sulphate) FeSO4. 5H2O

पर्याय - कासीस, पुष्पकासीस, पांशुक, पांशुकासीस, खग

आकृति - मणिभाकृति (Crystaline)

भेद - रसरत्नसमुच्चयकार - 2

1) बालुकाकासीस
2) पुष्पकासीस

कासीस शोधन -

1) **निमंज्जन -** कासीस को भृंगराज स्वरस में या स्त्री के आर्तव में एक बार भिगोने पर शुद्ध हो जाता है।
2) **स्वेदन -** भृङ्गराज स्वरस में कासीस का 3 प्रहर तक स्वेदन करने से शुद्ध हो जाता है।

कासीस मारण -

- **कांजी (7) times - लघुपुट**
- **नींबू स्वरस - पुट**

➢ सर्वप्रथम शुद्ध कासीस में काञ्जी की सात भावना देकर सुखायें। फिर लघुपुट में रखकर अग्नि में फूँक देने पर कासीस की रक्तवर्ण की भस्म बन जाती है।

➢ पुनः इसी भस्म को नींबू स्वरस की भावना देकर सुखाकर अम्लता नष्ट होने तक पुट देते रहने पर सर्व दोष रहित कासीस की भस्म बन जाती है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मात्रा - 1/2 - 2रत्ती

कासीस सत्व - Fe

प्रमुख योग -

1) रजःप्रवर्तनी वटी
2) रसपुष्प
3) गुटिका , तैल

स्फटिका (Potash Alum) { K2 SO4 AI2(SO4)3, 24H2O }

पर्याय - तुवरी,सौराष्ट्री, सौराष्ट्रमृत्तिका, स्फुटिका, फटिका, शुभ्रा, कांक्षी, रंगदा, रङ्गदात्री।

फिटकरी भेद - **रसरत्नसमुच्चयकार - 2**

1) फटकी
2) फुल्लिका

फिटकरी शोधन -

1) **अग्नि पर -** फिटकरी को लौहे की कड़ाही में डालकर अग्नि पर फुलाने पर शुद्ध हो जाती है।
2) **निमज्जन -** फिटकरी को तीन दिन तक काञ्जी में डुबोकर रखने पर शुद्ध हो जाती है।

स्फटिका का मारण - स्फटिका को शराब सम्पुट में बंद कर ⟶ लघुपट की 1 अग्नि ⟶ श्वेत वर्ण की भस्म

मात्रा - 2 - 4 रत्ती

स्फटिका सत्व - **AL**

प्रमुख योग -

1) एलादिमन्थ
2) शंखद्राव
3) शुभ्राभस्म
4) शंखद्रावक रस

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

हरताल (Orpiment or Yellow arsenic) { As2S3 }

पर्याय - ताल, तालक, नटभूषण, पिञ्जर, वंशपत्रक ,वंगारि, विडालक

भेद - **(र.र.समु) - 2**

1) पत्रहरताल - **बहुपत्र** ⟶ रसायनम् - उत्तम
2) पिण्डहरताल - **स्त्रीपुष्पहरणं** - अधम

हरताल शोधन -

1) **स्वेदन -** कूष्माण्ड स्वरस, (तिलक्षार जल एवं चूर्णोदक में से किसी भी एक द्रव में दोला यन्त्र विधि से स्वेदन करने पर हरताल शुद्ध हो जाता है।

2) **प्रक्षालन - स्वेदन -**

- उत्तम पत्र हरताल के छोटे-छोटे टुकड़े करके उसमें दसवाँ भाग शुद्ध टंकण डालकर जम्बीरी नींबू स्वरस तथा काञ्जी से।
- प्रक्षालन कर उसे चतुर्गुण वस्त्र की पोट्टली में बाँधकर दोला यन्त्र विधि से चूर्णोदक, काञ्जी, कूष्माण्ड स्वरस, या शाल्मली स्वरस में से किसी भी एक द्रव में एक दिन स्वेदन करने पर हरताल शुद्ध हो जाता है।

3) **स्वेदन -** त्रिफला क्वाथ या तिलतैल में 12 घण्टे तक दोला यन्त्र विधि से स्वेदन करने पर हरताल शुद्ध हो जाता है।

हरताल मारण - पलाशमूलत्वक् 3 भावना - भैंस के मूत्र की भावना - 12 पुट

- शुद्ध हरताल में पलाशमूलत्वक् के मधु के समान गाढे क्वाथ की 3 भावना देकर पुनः उसमें भैंस के मूत्र की भावना देकर चक्रिका बनायें।
- फिर इन चक्रिकाओं को सुखाकर शराव सम्पुट में बन्द कर 10 ऊपलों की अग्नि में पाक करें।
- इसी प्रकार **12 पुट** देने पर हरताल की उत्तम भस्म बन जाती हैं।

Ayurvedic Formulation

हरताल भस्म मात्रा - 1/4 रत्ती -1/ 2 रत्ती

हरताल सेवन में अनुपान - गुडूची कषाय, शहद, घृत आदि।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

प्रमुख योग -

1) कस्तुरीभैरव
2) तालुसिन्दूर
3) नित्यानन्द रस
4) समीरपन्नगरस
5) वातगजांकुश रस

मनः शिला (Realgar or Red arsenic) { As2 S2 }

पर्याय - रोगशिला, शिला, नैपालिका, मनोगुप्ता, कुनटी, कुलटी, नागमाता, **भूत उपद्रवनाशिनी, दिव्यऔषध।**

मनः शिला भेद - रसरत्नसमुच्चयकार - 3

1) श्यामांगी - रक्तवर्ण - श्रेष्ठ
2) कणवीरका - पीतवर्ण - श्रेष्ठतर
3) खण्डाख्य - अति रक्तवर्ण - **सर्वश्रेष्ठ**

ग्राह्य मनःशिला -

1) कंकड पत्थर रहित
2) रक्त कमल सदृश वर्ण युक्त
3) भार में गुरु
4) चमकदार

मनःशिला शोधन -

1) **भावना -** अगस्त्यपत्र स्वरस या आर्द्रक स्वरस , बिजौरा नींबू स्वरस की 7 भावना देने पर मनः शिला शुद्ध हो जाती है।
2) मनः शिला को चूर्णोदक में तीन दिन रखने से शुद्ध हो जाती है।

मनः शिला मात्रा - 1/ 24 से 1/16 रत्ती

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मनः शिला का सत्त्व - संखिया (Arsenic)

मनःशिला के प्रमुख योग -

1) श्वासकुठार रस
2) चन्द्रोदय वर्ती
3) क्षयकेशरी रस
4) समीरपन्नग रस

अञ्जन (Collyrium)

पर्याय - मेचक, लोचक, अञ्जन

अञ्जन के भेद -

1) **सौवीराञ्जन**- यह धूम्रवर्ण, पाण्डुर वर्ण अथवा श्वेतवर्ण रसाञ्जन - पीतवर्ण
2) **स्रोतोञ्जन** - वल्मीक शिखराकार, तोडने पर नीलवर्ण
3) **पुष्पाञ्जन** - श्वेतवर्ण
4) **नीलाञ्जन** - भारी, नीलवर्ण

अञ्जन का शोधन - भृङ्गराज स्वरस की भावना देने पर सभी प्रकार के अञ्जन शुद्ध हो जाते है।

अञ्जन के योग -

1) पुष्यानुग चूर्ण
2) पीयूषवल्ली रस
3) पत्रांगासव
4) वातारि रस

कंकुष्ठ (Ruhbarb)

पर्याय - तालकुष्ठ, तीक्ष्णदुग्धिका, रेचक, हेमवती

कंकुष्ठ भेद - 2

1) नलिका कंकुष्ठ
2) रेणुक कंकुष्ठ

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कंकुष्ठ शोधन -

- कंकुष्ठ में शुण्ठी के क्वाथ की तीन भावना देने पर शुद्ध हो जाता है।
- यह स्वयं सत्त्वरूप होने से इसका सत्त्व पातन नहीं करना चाहिए।

कंकुष्ठ के प्रमुख योग -

1) धन्वन्तरि घृत
2) धन्वन्तरि रस
3) मृतसंजीवनी रस

साधारण रस

" कम्पिल्लश्चापरो गौरीपाषाणो नवसादरः । कपर्दो वह्निजारश्च गिरिसिन्दूरहिङ्गुलौ ।

मृद्दारशृङ्गमित्यष्टौ साधारणरसाः स्मृताः।। "

1) कम्पिल्लक
2) गौरीपाषाण
3) नवसादर
4) कपर्द
5) अग्निजार
6) गिरिसिन्दूर
7) हिङ्गुल
8) मृद्दार शृंग

कम्पिल्लक (Mallotus philippinensis)

पर्याय - कम्पिल्लक, रक्तचूर्णक, रेचन, कर्कश, रोचन, रक्ताङ्ग,

कम्पिल्लक का शोधन - इष्टिका चूर्ण आदि अशुद्धि को दूर करने के लिए कम्पिल्लक को जल में डाल देने से ही शुद्ध हो जाता है।

मारण और सत्वपातन - वानस्पतिक द्रव्य होने के कारण। मारण और सत्व पातन नहीं होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मात्रा - 4 - 6 गुन्जा

प्रमुख योग -

1) कृमिघातिनी गुटिका
2) त्रिफलादिघृत
3) बिन्दुघृत
4) कम्पिल्लकमलहर

गौरीपाषाण/संखिया (White arsenic) {AS2 O3}

पर्याय - सोमल, मल्ल, फेनाश्म , संखिया शंखविष, दारूमूषा, दारूमोच, मूषक, **आखुपाषाण**

भेद - रसरत्नसमुच्चय - 3

1) स्फटिकाभ- श्वेतवर्ण- स्फटिक सदृश चमकीला
2) शंखाभ - पीताभ श्वेतवर्ण: शंख के सदृश
3) हरिद्राभ- पीतवर्ण: हरिद्रा सदृश

संखिया शोधन -

1) संखिया के मोटे चूर्ण को वस्त्र में पोट्टली बाँधकर दोला यन्त्र विधि से तण्डुलीय स्वरस में एक दिन स्वेदन करने पर संखिया शुद्ध हो जाता है।
2) बकरी के दूध या मांसरस में दोला यन्त्र विधि से एक दिन तक स्वेदन करने पर संखिया शुद्ध हो जाता है।
3) कारवेल्लक के अंदर रखकर दोला यन्त्र विधि से 1प्रहर तक स्वेदन करने पर संखिया शुद्ध हो जाता है।

संखिया की मात्रा - 1/120 से 1/30 रत्ती

संखिया सत्त्वपातन - शुभ्र

संखिया विषप्रभाव शमनोपाय -

1) गोदुग्ध में गोघृत और मिश्री मिलाकर पिलाना
2) टङ्कण का जलीय विलयन पिलाना
3) करैलाफल स्वरस पिलाना

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

संखिया के प्रमुख योग -

1) समीरपन्नग रस
2) मल्लसिन्दूर
3) सूचिकाभरण रस
4) सन्निपातभैरव रस

नवसादर (Ammonium Chloride) { NH4Cl }

पर्याय - नवसार , नृसादर, नृसार, नरसादर, चूलिकालवण, चुल्लिका लवण।

नवसादर भेद -

1) कृत्रिम
2) खनिज

नवसादर शोधन - एक भाग नवसादर को तीन गुणा जल में घोलकर वस्त्र से छान करके पात्र में रखें। फिर पात्र को चूल्हे पर चढ़ाकर तीव्राग्नि से पाक करने पर जल पूर्णतः शुष्क होकर शुद्ध नवसादर प्राप्त हो जाता है।

नवसादर मात्रा - 2 से 8 रत्ती

नवसादर के प्रमुख योग -

1) श्वेतपर्पट
2) शंखद्राव
3) स्वर्णवङ्ग
4) रसवृश्चिकदंशहर लेप

Ayurvedic Formulation

कपर्द (Cowries) { CaCo3 }

पर्याय - वराटक, वराट, वराटी, वराटिका, कपर्दक, कपर्द, कपर्दी, कपर्दिका, **बालक्रीडनक,** चर, चराचर

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कपर्द भेद -

1) पीत : उत्तम
2) श्वेत : मध्यम
3) धूसर अधम

ग्राह्य वराटिका -

1) दीर्घवृन्त
2) स्वर्णवर्ण
3) पृष्ठ भागपर छोटी-छोटी गांठयुक्त

वराटिका शोधन - वराटिका को एक प्रहर तक काञ्जी, कुलत्थक्वाथ, नीबूस्वरस अथवा किसी भी अम्लद्रव में दोला यन्त्र विधि से स्वेदन करके उष्ण जल से प्रक्षालन करने पर शुद्ध हो जाती है।

वराटिका मारण -

- शुद्ध वराटिकाओं को दो मिट्टी के शरावों के मध्य रखकर दोनों शरावों की सन्धि को ठीक से बिठाकर सन्धि लेपन करके धूप में सुखायें।
- इस शराव सम्पुट को गजपुट की अग्नि में पाक करें।
- फिर स्वांगशीत होने पर शराव सम्पुट से कौड़ी को निकालकर खल्व में पीसकर रखें।

कपर्दभस्म - श्वेत

वराटिका मात्रा - 2 रत्ती

वराटिका प्रमुख योग -

1) अग्निकुमार रस
2) प्रवालपञ्चामृत रस
3) ग्रहणीकपाट रस
4) रत्नगर्भपोट्टली रस

अग्निजार (Ambergris)

Ayurvedic Formulation

पर्याय - अग्निगर्भ, अग्निनिर्यास, अग्निज्वाला, अग्निजार, वह्निजार, सिन्धुफला , जरायु।

अग्निजार शोधन - अग्निजार के शोधन, मारण का शास्त्रों में वर्णन नहीं मिलता है। क्योंकि यह सुगन्धित द्रव्य है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

अग्निजार मात्रा - 1/4 रत्ती से 1/2 रत्ती तक

अनुपान - मधु, घृत, मक्खन आदि।

अग्निजार के प्रमुख योग -

1) वृहत् वातचिन्तामणि रस
2) चिन्तामणि रस
3) जहरमोहरा वटी

गिरिसिन्दूर (Red Oxide of Mercury) { Hgo }

पर्याय - सिन्दूर, रक्तरेणु

भेद -

1) गिरिसिन्दूर
2) नाग सिंदूर

हिंगुल (Cinnabar) Red sulphide of mercury { HgS (6:1) }

पर्याय - म्लेच्छ, रक्त, सुरङ्ग, चित्राङ्ग, चूर्णपारद, रञ्जन, हंसपाद, दरद

भेद - आर्युवेद प्रकाश - 3

1) चर्मार: कृष्णवर्ण
2) शुकतुण्ड : पीतवर्ण
3) हंसपाद : जपाकुसुमवर्ण { हंसपाद को सर्वोत्तम माना गया है }

रसरत्नसमुच्चय - 2

1) शुकतुण्ड
2) हंसपाद

ग्राह्य हिंगुल -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) जपाकुसुम वर्ण के समान
2) पीसने पर मनोहर
3) देखने में चमकीला लाल भारयुक्त

हिंगुल शोधन -

1) भावना -

- हिंगुल में भेड़ के दूध एवं नींबू स्वरस की सात-सात भावना देकर सुखाने पर शुद्ध हो जाता है।
- लकुच स्वरस /अदरक स्वरस - 7 भावना

मात्रा - 1 / 2 -1 रत्ती

अनुपान - मरिच तथा गुड़ / पिप्पली एवं गुडुची स्वरस / मधु

प्रमुख योग -

1) हिंगुलेश्वर रस,
2) आंनदभैरव रस,
3) कनकसुन्दर रस,
4) त्रिभुवनकीर्ति रस,
5) कस्तुरीभैरव
6) बसंतमालती रस

मुर्दाशंख (Litharge) - Pbo

पर्याय - मृद्दारश्रृंगक, बोदारश्रृंग, मुर्दाशंख, मुर्दाशंखक

भेद - र.र.समु - 2

1) सदल
2) निर्दल

साधारण रसों का सामान्य शोधन -

- साधारण रस के किसी भी द्रव्य को मातुलुङ्ग एवं आर्द्रक स्वरस की 3-3 भावना तीन दिनों तक देने से शुद्ध हो जाते है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रत्नोपरत्न प्रकरण (Gems & Miner Gems)

" माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि तार्क्ष्यञ्चपुष्पं भिदुरञ्चनीलम् ।

गोमेदकञ्चाथ विदूरकञ्च क्रमेण रत्नानि नवग्रहाणाम् ।। "

(रसे. चू. 12/1, र. र. स. 4/6)

रत्न पर्याय - मणि , वरपाषाण

रत्न परिभाषा -

- जो द्रव्य अपने वर्ग के अन्य खनिजादि द्रव्यों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर और उत्तम गुण युक्त होते है ।
- इन द्रव्यों के मूल्यवान होने के कारण मनुष्य को अतिप्रिय होते है। इनको रत्न कहते है ।

रत्नों की श्रेष्ठता -

- रत्नों के द्वारा पारद का बन्धन होता है ।
- देह का धारण, मनुष्यों के जरावस्था एवं रोग का निवारण भी करते है ।

रत्नों के गुण -

1) दुर्लभता
2) टिकाउपन
3) कठोरता
4) सुन्दरता
5) आकर्षक रङ्ग
6) मूल्यवान्

रत्नों के दोष -

" ग्रासस्त्रासश्च बिन्दुश्च रेखा च जलगर्भता । सर्वरत्नेष्वमी पञ्चदोषा साधारणा मताः ।। "

1) ग्रास
2) त्रास
3) बिन्दु
4) रेखा
5) जलगर्भता

Note - रत्नों में क्षेत्रीय एवं जलीय दोष नहीं होते है

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) ग्रास दोष -

- जब रत्न का कुछ भाग अपारदर्शक या काला हो, उसे ग्रास दोषयुक्त माना जाता है।
- यह ग्रास शब्द ग्रहण वाचक है।

2) त्रासदोष -

- जब रत्न के कुछ भाग में प्राकृत वर्ण और कुछ भाग में अन्य वर्ण हो तो उसे त्रास दोष युक्त माना जाता है।
- त्रास दोष भयोत्पादक एवं अशुभ माना जाता है।

3) बिन्दु -

- जब रत्न में विभिन्न वर्ण के कहीं-कहीं छोटा बिन्दु या कण दिखाई दे, उसे बिन्दु दोष युक्त माना जाता है।

4) रेखा दोष-

- जब रत्न में अकेली या परस्पर काटती हुई कोई रेखा दिखाई दे, उसे रेखा दोषयुक्त माना जाता है।

5) लगर्भता दोष -

- जब रत्न के मध्य शून्य या बुदबुद जैसा दिखाई देता है, उसे जलगर्भता दोष माना जाता है।

रत्नों पर काल का प्रभाव -

- खनिज रत्नों पर जल, वायु एवं काल का प्रभाव नहीं होता है।
- किन्तु प्रवाल एवं मुक्ता पर काल का प्रभाव होने के कारण वृद्ध एवं मलिन हो जाते हैं।

Ayurvedic Formulation

रत्नों का सामान्य शोधन -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

एक पोट्टली में रत्नों को बाँधकर दोला यन्त्र में जयन्ती स्वरस द्वारा एक प्रहर तक स्वेदन करने पर शुद्ध हो जाते हैं।

रत्नों का विशेष शोधन -

1) **माणिक्य** - जम्बीरी नींबू रस आदि अम्लद्रव
2) **मुक्ता** - जयन्ती स्वरस
3) **प्रवाल** - क्षारवर्ग के द्रव
4) **पन्ना** - गोदुग्ध,
5) **पुखराज** - समभाग काजी एवं कुलत्थ क्वाथ

6) **हीरे** - तण्डुलीय स्वरस
7) **नीलम** - नीली स्वरम
8) **गोमेद** - गोरोचनयुक्त जल
9) **वैदूर्य** - त्रिफला क्वाथ

❖ एक प्रहर तक दोला यन्त्र द्वारा स्वेदन करने पर विशेष शोधन हो जाता है।

रत्नों का मारण -

1) माणिक्य, पन्ना, पोखराज, नीलम, गोमेद एवं वैदूर्य का मारण -

(मनःशिला, गन्धक एवं हरिताल + लकुच स्वरस + आठ गजपुट)

मनःशिला, गन्धक एवं हरिताल को समान भाग में लेकर लकुच स्वरस के साथ मर्दन कर कल्क बनाकर उसमें माणिक्य, पन्ना, पोखराज, नीलम, गोमेद एवं वैदूर्य में से किसी एक रत्न का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर शराव सम्पुट कर आठ बार गजपुट में पकाने पर भस्म हो जाती है।

2) मुक्ता एवं प्रवाल का मारण -

(गुलाबजल और घृतकुमारी स्वरस + कुक्कुट पुट एवं गजपुट - 3 बार)

मुक्ता एवं प्रवाल को सिमाक पत्थर के खल्व में चूर्ण करके **मुक्ता** में गुलाबजल और **प्रवाल** में घृतकुमारी स्वरस की भावना देकर टिकिया बनाकर सुखायें। फिर सूखने पर शराव सम्पुट **कर मुक्ता** को कुक्कुट पुट एवं प्रवाल का गजपुट में पाक करें। इस प्रकार 3 बार करने पर मुक्ता एवं प्रवाल की भस्म हो जाती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) हीरा का मारण -

शुद्ध हीरककण, **शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक एवं शुद्ध मनःशिला** को समान भाग लेकर सर्वप्रथम सिमाक पत्थर के खल्व में पहले पारद एवं हीरक कण का मर्दन करें। फिर उसमें मनःशिला एवं गन्धक मिलाकर कज्जली करें।

⇩

पुनः **नींबू स्वरस** की भावना देकर टिकिया बनाये, फिर टिकियाओं को सुखाकर शराव सम्पुट कर गुजपुट में पाक करे।

⇩

14 गजपुट में पाक करने पर हीरे की उत्तम भस्म बन जाती हैं।

धातु प्रकरण

धातु (Metal) -

धातु निरुक्ति -

- जिसके सेवन से शरीर में वली (झुर्रियाँ) पलित (बालों का सफेद होना), खालित्य (गंजापन), कृशता, निर्बलता, वृद्धावस्था और रोग नष्ट हो अथवा इन रोगों का नाश करके आरोग्यपूर्वक शरीर को धारण करें, उसे धातु कहते हैं।

ग्रहों का धातु के संबंध तथा धातुवर्ण आदि का संक्षिप्त वर्णन

ग्रह	धातु संबंध	धातुओ का वर्ण	धातु भस्म वर्ण	ज्वाला परीक्षा	यो. र. भस्म की मात्रा
सूर्य	ताम्र	रक्त वर्ण	कृष्ण वर्ण	नील	2 रत्ती
चंद्र	रजत	शुक्ल वर्ण	कृष्ण वर्ण	श्वेत	3 रत्ती
मंगल	पित्तल	पीत वर्ण			2 रत्ती
बुध	नाग	कृष्ण वर्ण	कपोत वर्ण	धूम्र	2 रत्ती
गुरु	स्वर्ण	पीत वर्ण	चम्पक वर्ण	पीत	1 रत्ती
शुक्र	वंग	शुक्ल वर्ण	श्वेत वर्ण	कपोत	2 रत्ती
शनि	तीक्ष्णलोह	कृष्ण वर्ण	पक्व जंबफल वर्ण	कृष्ण	2 रत्ती
राहु	कांस्य	श्वेत वर्ण	धूसर वर्ण		2 रत्ती

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अग्नि में धातुओं का क्षय -

- **स्वर्ण** - अक्षीण
- **नाग,वङ्ग** - 8 प्रतिशत
- **लौह** - 10 प्रतिशत
- **रजत** - 2 प्रतिशत
- **ताम्र** - 5 प्रतिशत

धातुओं का शोधन - दो

1) सामान्य शोधन
2) विशेष शोधन

1) सामान्य शोधन -

द्रव्य स्थित सामान्य अशुद्धियों को जिस विधि से दूर किया जाय, उसे सामान्य शोधन कहते हैं।

1) धातुओं के पतले पत्रों को तपाकर क्रमशः तैल, तक्र, गोमूत्र, काञ्जी एवं कुलत्थ क्वाथ में पृथक्-पृथक् सात बार बुझाने से सुवर्णादि सभी लौह शुद्ध हो जाते हैं।
2) कदली कन्द स्वरस में धातुओं को प्रतप्त करके सात बार बुझाने पर सभी धातुएँ शुद्ध हो जाती है।
3) शशक (खरगोश) के रक्त का लेपकर तीव्राग्नि में 3 बार प्रतप्त करने से मुण्डादि सभी लौह शुद्ध हो जाते हैं

2) विशेष शोधन -

वह विशिष्ट विधि जो किसी एक **द्रव्य विशेष के लिए निर्दिष्ट हो, उसे** विशेष शोधन कहा जाता है।

1) **गोदुग्ध** - अभ्रकशोधन
2) **पञ्चमृत्तिका** - स्वर्णशोधन
3) **वंग - हरिद्रा चूर्ण** मिश्रित निर्गुंडी द्वारा

धातुओं का सामान्य मारण -

1) वंग का **हरताल** द्वारा,
2) लौह का **हिंगुल** द्वारा,
3) सुवर्ण **का नाग द्वारा**,
4) नाग का **मनः शिला** द्वारा,
5) ताम्र का **गन्धक** द्वारा
6) रजत का **सुवर्णमाक्षिक द्वारा** शीघ्रता से मारण हो जाता हैं

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

धातुओं के मारणार्थ अग्निप्रमाण -

- **स्वर्ण एवं रजत के लिए** - कुक्कुटपुट
- **ताम्र** - काष्ठादि की तीव्राग्नि
- **लौह** - गजपुट की अग्नि
- **नाग** - अर्द्ध गजपुट/कुक्कुटपुट

धातु भस्मों के प्रकार -

1) **उत्तम -** पारद से धातुओं का मारण करने पर उत्तमभस्म।
2) **मध्यम -** वानस्पतिक द्रव्यों से धातुओं का मारण करने पर मध्यम भस्म।
3) **कनिष्ठ -** गन्धकादि द्रव्यों से धातुओं का मारण करने पर कनिष्ठ भस्म।
4) **निकृष्ट -** अरिलौह से धातुओं का मारण करने पर दुर्गुणप्रद होती है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

विष एवं उपविष प्रकरण (Poisons & Sub Poisons)

विष शब्द की निरुक्ति -

- जिसे देखने मात्र से मनुष्य (पशु-पक्षी) अत्यन्त दुःखी हो जाते है या जो मनुष्य को मृत्यु द्वारा नष्ट कर दें, उसे विष कहते हैं।

विष के पर्याय - क्ष्वेड, गरल, कालकूट

विष के भेद -

आचार्य चरक & सुश्रुत - 2

1) **स्थावर** - खनिज एवं वानस्पतिक विष
2) **जाङ्गम** - सर्प, वृश्चिक, लूता आदि विष
3) **कृत्रिम** - संयोगज या गरविष (रसतंत्रविद)

स्थावर विष के अधिष्ठान - 10

" मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक् क्षीर सार एव च। निर्यासो धातवश्चैव कन्दश्च दशमः स्मृत। "

जाङ्गम विष के अधिष्ठान - 16

" दृष्टि, निःश्वास,दंष्ट्रा, नख, मूत्र, मल, शुक्र, लाला, आर्तव, स्पर्श, संदंश, अवमर्दित, गुदा,अस्थि, पित्त,शूक "

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

विष के दस गुण -

" लघु रूक्षमाशु विशदं व्यवायी तीक्ष्णं विकासि सूक्ष्मं च। उष्णमनिर्देश्यरसं दशगुणयुक्तं विषं तज्ज्ञैः।। "

(च. चि. 23/24)

1) लघु
2) रुक्ष
3) आशु
4) विशद
5) व्यवायी
6) तीक्ष्ण
7) विकासी
8) सूक्ष्म
9) उष्ण
10) अनिर्देश्य रस

विष संख्या -

- **रसार्णव - 5**
- **रसरत्नसमुच्चय - 5 { कालकूट, शृङ्गीक, वत्सनाभ, सक्तुक, पित्त (हारिद्र) }**

विषों का सामान्य शोधन -

1) एक पात्र में गोमूत्र भरकर विष के चने के समान टुकड़ों को अच्छी तरह भिगोकर रखें। प्रतिदिन पुराना गोमूत्र निकालकर नवीन गोमूत्र डाला जाय।
2) इस प्रकार तीन दिन तक गोमूत्र में रखने के बाद तीव्र धूप में सुखाने के बाद योगों में प्रयुक्त करें अथवा गोदुग्ध में पाँच प्रहर तक स्वेदन करने पर भी विष शुद्ध हो जाता है।

विष का मारण -

1) विष में विष के समान भाग टंकण मिलाकर मर्दन करने पर विष का विषत्व नष्ट होकर सभी रोगों में प्रयोग योग्य हो जाता है और किसी भी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं करता।
2) विष के समान भाग टंकण तथा द्विगुण मरिच मिलाकर एकत्र मर्दन करने पर विष का शोधन-मारण हो जाता है।

विष की मात्रा -

- एक तिल के समान मात्रा से प्रारम्भ कर आठ यव पर्यन्त घटाते-बढाते हुए विष का सेवन करना चाहिए।
  - **विष वर्ग के द्रव्यों में वत्सनाभ रसकर्म एवं रसायन के लिए सर्वश्रेष्ठ होता है।**

वत्सनाभ (Aconitum Ferox)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पर्याय - वत्सनाभ, वत्सनाग, क्ष्वेड़, विष, अमृत।

वत्सनाभ का स्वरूप -

- सिन्दूवार सदृश्य पत्र
- वत्सनाभ्याकृति

वत्सनाभ भेद - 3

1) कृष्णाभ - श्रेष्ठ
2) कपिश - श्रेष्ठतर
3) पाण्डु - श्रेष्ठतम

ग्राह्य वत्सनाभ -

- जो वत्सनाभ स्थूलकन्द, बाहर से स्निग्ध, गुरु, नवीन, एवं फल आने के बाद उखाड़ा गया, कीट घुन से रहित हो, वह औषध कार्य के लिए श्रेष्ठ होता है।

वत्सनाभ शोधन -

- वत्सनाभ के चने के समान छोटे-छोटे टुकड़े **करके गोदुग्ध या बकरी के दूध** में एक प्रहर या दो प्रहर तक दोला यन्त्र विधि से स्वेदन करने पर शुद्ध हो जाता है।

वत्सनाभ विषप्रभाव चिकित्सा - वत्सनाभ विष के लक्षण उत्पन होने पर **टंकण एवं घी का** प्रयोग करना चाहिए।

प्रयोज्यांग - मूल

औषधार्थ मात्रा - 1/8 रत्ती

वत्सनाभ के योग -

1) मृत्युञ्जय रस
2) कफकेतु रस।
3) हिंगुलेश्वर रस
4) आनन्दभैरव रस
5) सूतशेखर रस

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

उपविष

संख्या -

रसरत्नसमुच्चयकार - 7

1) लाङ्गली
2) कुचला
3) कनेर
4) भांग
5) भल्लातक
6) धत्तूरा
7) अर्क

रसतरङ्गिणीकार - 11

1) कुचला
2) अहिफेन
3) जयपाल
4) धत्तूरबीज
5) भल्लातक
6) भांग
7) गुञ्जा
8) स्नुहीक्षीर
9) अर्कक्षीर
10) लाङ्गली
11) करवीर

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728